|| जिनवाणी गाइड ||

भेंटकर्ता

1. श्रीमती वीना, अशोक सरकार
2. श्रीमती भावना, अंकुर कालरा
3. श्रीमती अनीता, मनोज जैन
4. तुषार जैन, मीनाक्षी जैन
5. श्री राजेश, चारू जैन
6. रिशब जैन, पदमावति जैन
7. श्री दिनेश, नताशा जैन
8. नम्रता जैन, राहुल जैन, सिद्धार्थ जैन

प्रकाशक :

दिनेश जैन

नरेन्द्र वैलफेयर ट्रस्ट

59, गांधी रोड, देहरादून - 248001 (उत्तरांचल)

दूरभाष : 0135-2623740 फैक्स : 2626563

मुद्रक :

समय-साक्ष्य, देहरादून दूरभाष : 2658894



उपाध्याय श्री 108 गुप्ति सागर जी महाराज

।। आमुख ।।

उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि जिन के मायने है इन्द्रियों और कषायों पर विजय प्राप्त करने वाले। ऐसे महात्मा की दिव्य देशना का नाम है जिनवाणी। जो परमौषधि रूप है, विषय सुखों का त्याग कराने वाली है, अमृत तुल्य है, जरा-मरण व्याधि का हरण करने वाली है एवं सम्पूर्ण दुःखों का क्षय करने वाली है।

ऐसे महामना की भक्ति उपासना-आराधना मनुष्य के जीवन में नया मोड़ लाती है, प्राणिमात्रा के प्रति समता जगाती है, अशुभ से शुभ की यात्रा कराती शुद्ध में ले जाती है।

सचमुच ही अर्हत भक्ति स्व-स्वरूप का अन्वेषण है,

व्यवहार से निश्चय में पहुँचाती है। आचार्य प्रवर श्री कुन्दकुन्द एवं आचार्य समन्तभद्र जी जैसे तपोधन अर्हत भक्ति में रहते हुए निश्चय मोक्ष मार्ग को प्राप्त हुए।

जैन रत्न श्री नरेन्द्र कुमारजी एक श्रेष्ठ श्रावक थे, जो मेरे विशेष शिष्यों में से थे। भक्ति-भाव एवं समर्पण की पराकाष्ठा थी। आपने अपने जीवन में अनेक परोपकार के कार्य किये हैं। अहिंसा-शाकाहार प्रचार के लिए तो प्रायः सभी को प्रेरित करते रहे। ऐसे व्यक्ति ही समाज को पथ प्रदर्शक होते हैं। इसी मार्ग पर आपके सुपुत्र युवक श्रेष्ठ श्री दिनेश जी भी चल रहे हैं। हमारा बहुत-बहुत आशीर्वाद सदा सन्तों में आस्था बनी रहे।

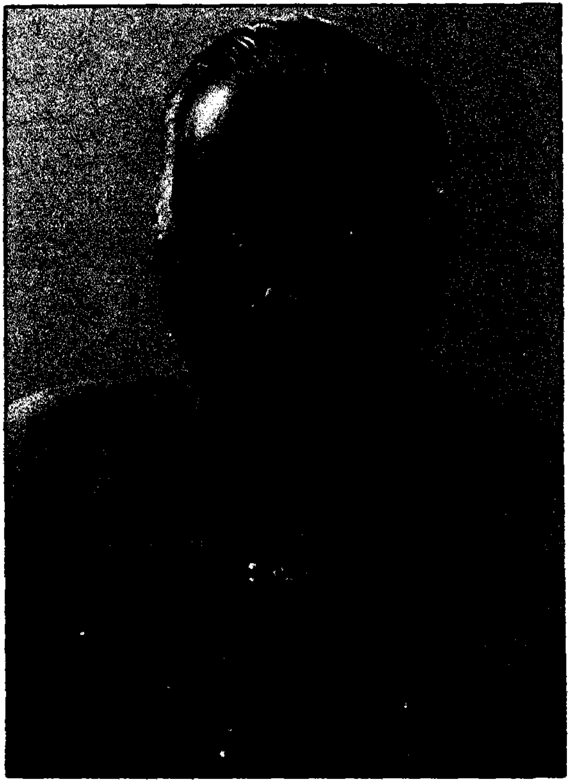
'जिनवाणी गाइड' आपके पिताश्री की भावनाओं का प्रतिफल है। संग्रह श्रेष्ठ है। जन-जन के लिए उपयोगी रहेगी। समादर करे।

***



स्व. श्रीमती श्रीकान्ता जैन

11.11.1927 — 24.03.1985



स्व. श्री नरेन्द्र कुमार जैन

11.10.1922 – 29.01.2001

।। स्व० श्री नरेन्द्र कुमार जैन जी ।।
का परिचय

श्री नरेन्द्र कुमार जैन जिन्हे प्यार से सभी भाई जी के नाम से पुकारते थे, का जन्म 11 अक्टुबर 1922 को कस्बा देवबन्द जिला सहारनपुर में हुआ था। बाल्यावस्था मे ही देवबन्द व मुजफ्फरनगर मे शिक्षा प्राप्त कर स्टूडेन्ट फैडरेशन में सक्रीय हुए। मेरठ विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्ति के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता आन्दोलन मे देशभक्ति की भावना लिए अपने कालेज मे स्टूडेन्ट कांग्रेस का संगठन किया और स्वतंत्रता संग्राम में सक्रीय हुए। इसी दौरान भाई जी ने अनेक बार जेल यात्रा भी की ।

बचपन से ही स्काउटिंग के प्रति उनकी विशेष रूचि रही और अपने जीवन का सामाजिक समय में विशेष योगदान

स्काउटिंग में व्यतीत किया। तत्कालीन राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद ने उन्हें स्काउटिंग का सर्वोच्च पदक "सिल्वर एलीफेन्ट" प्रदान किया।

भगवान महावीर की वाणी - 'व्यक्ति जन्म से ही नही कर्म से महान बनता है" भाई जी के जीवन में चरितार्थ हुई वे धार्मिक भक्ति की भावनाओं से ओतप्रोत थे। सरल स्वभाव निष्कपट व्यवहार तथा मृदु भाषी होने के कारण वे लोकप्रिय होते गये।

उद्योग प्रशस्तिपत्र प्रदान करते हुए राष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती ने इनकी कर्तव्यपरायणता की सराहना की। भाई जी हिंदी उर्दू व संस्कृत भाषा के ज्ञाता थे। वे लेखक भी थे। सभी वर्ग, सभी धर्मो को उन्होंने एक नारा दिया "मिल बैठो"। सब प्रकार के भेदभावों, विषमताओं तथा दुर्भावनाओं को भुलाकर मिलो, प्यार से मिलों यही उनका संदेश हैं।

भाईजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रशंसनीय व अनुकरणीय रहा। भगवान के प्रति श्रद्धा व भक्ति थी उनमें। जिन जीवन मूल्यों को उन्होंनं अपने जीवन मे अपनाया वे प्रेरणादायक

थे। भाई जी राष्ट्रीय विचारक, बुद्धिजीवी, स्वतंत्रता सेनानी, विश्वबंधुता व एकता के अग्रणी थे।

ऐसे यशस्वी जीवन जीने वाले, कर्मठ, बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व, धर्मशील व समाजभूषण को हम शत्‌शत्‌ नमन करते है। समाज व विद्वानों की चिन्ता करने वाले ऐसे सारस्वत के प्रति हम जितना भी सम्मान प्रकट करे वह कम ही है।

***

जैन धर्म क्या है?

'जैन' का शाब्दिक अर्थ है 'विजेता'।

जिन धर्म ही जैन धर्म है। यही आत्ममुक्ति का मार्ग है। इस पर चलकर शाश्वत सत्य की प्राप्ति हो सकती है। इस धर्म के संवाहक तीर्थंकर भगवान है। जैन धर्म अनादि कालीन धर्म है। इस धर्म के अनुसार केवलपद अर्थात् मोक्ष प्राप्त करने का त्रिविध मार्ग है, जिसे तीन रत्न कहा जाता है: सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान तथा सम्यक चारित्र। जैन धर्म का सार इस वाक्य में निहित है :-

"अपना कर्तव्य करो और इसे जहाँ तक हो सके मानवीय ढंग से करो।" सभी जैन कर्म व मोक्ष में विश्वास करते हैं। मोक्ष का अर्थ कर्म की बेड़ियों से मुक्ति प्राप्त करना है।

जैन धर्म का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति है। अनेक

जीवों के रूप में यहाँ तक कि देवताओं के रूप में भी आत्मा जन्म-मृत्यु के चक्र में फँसी रहती है। इसी से छुटकारा केवल पद प्राप्त करना, अर्थात् मोक्ष प्राप्त करना है। आत्मा में अनन्त शक्ति है। कर्म के द्वारा मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। महावीर जी के अमर शब्दों में, हे मानव तू अपना मित्र आप है, तू अपने से अलग मित्र की चाहना क्यों करता है? सच्चा विजयी वीर वह है जो अपनी वासनाओं पर विजय पा कर अपने सह प्राणियों को परास्त करता है, स्वयं अपने आप से लड़ो-बाहरी शत्रुओं से क्यों लड़ते हो? इस भाँति 'जैन धर्म' का मानव मात्र के लिए यह संदेश है कि वह अपनी स्वयं की सहायता से पूर्णता को प्राप्त करें। तीर्थंकरों का लक्ष्य किसी एक धर्म का ही नही वरन् विश्व को सही राह दिखाकर सभी का कल्याण करना है। तीर्थंकर अवतार नहीं होते वे अंत में परमात्मा ही बन जाते है।

जैन धर्म एक ऐसी गंगा है, जो सबको पावन करती है। जैन धर्म में जाति भेद जैसी कुरीति न होने के कारण किसी भी जाति या कुल में जन्मा व्यक्ति इस धर्म में दीक्षित होकर

समस्त जैन समाज के लिये पूज्यनीय हो जाता है।

जैन दर्शन का मानना है, आत्मा अरूप है। अतः उसे किसी यंत्र के द्वारा नहीं देखा जा सकता है। इस धर्म में आत्मा को जानने के लिए ध्यान की गहराई में उतरने पर विशेष बल दिया गया है वास्तव में आत्मा अनुभूति का विषय है, और अनुभूति की प्रगुणता ही ध्यान है। जैन धर्म की समूची साधना, ध्यान का ही विस्तार है। ध्यान से ही व्यक्ति के राग-द्वेष क्षीण होते हैं और राग-द्वेष मुक्त अवस्था में ही आत्मा में सत्य का प्राकट्य होता है।

जैन धर्म का मनोविज्ञान और परामनोविज्ञान अत्यन्त समृद्ध और संवेदनशील है। आज के अनेक आधुनिक वैज्ञानिक भी आत्मा के अस्तित्व को जैन धर्म की मान्यता के अनुसार स्वीकार करने लगे हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वर्गीय पियरेदिकान्तेनाओं के अनुसार-'प्रत्येक मानव के पास आत्मा होती है। आप किसी भी दृष्टिकोण से विचार करें, अन्ततः आपको यही मानने को बाध्य होना पड़ेगा कि आदमी अमरत्व का स्वयं प्रमाण है ।'

वास्तव में "धर्म वस्तु के स्वभाव को कहते हैं, वही उसका धर्म है आत्मा का स्वभाव ज्ञान दर्शन है। आत्मा के निज स्वरूप को प्राप्त करने में जो-जो उपयोगी साधन है व्यवहार की दृष्टि से उनको भी धर्म कहा जाता है।

विश्व में दो प्रकार के पदार्थ हैं चेतन और अचेतन। चेतन पदार्थ वे हैं जिनमें जानने की शक्ति है अथवा जो सुख-दृःख, का वेदन या अनुभव कर सकते है इसके विपरीत अचेतन या जड़ पदार्थ वे है जिनमें जानने व अनुभव करने की शक्ति नहीं है जो सुख-दुःख का वेदन नहीं कर सकते।

यदि मनुष्य धर्म चिंतन करके अपने वास्तविक स्वभाव को पहचानने तथा उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करे जो सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है। अतः आत्मा के निज स्वरूप को प्राप्त करने में जो-जो उपयोगी साधन हैं, व्यवहार की दृष्टि से उनको भी धर्म कहा जाता है।

***

|| प्रस्तावना ||

तीनों लोकों के नाथ ऐसे अरिहंत या तीर्थंकर भगवंत को नमस्कार है जो धर्म का प्रारम्भ करते हैं, तीर्थ की स्थापना करते हैं, जो स्वयं बुद्ध होते है, पुरूषों में उत्तम व सिंह के सदृश होते हैं, पुरूषों में उत्तम पुजारी का कमल तुल्य और गंध युक्त हस्ती के समान होते हैं, जो तीनों लोकों में उत्तम हैं, तीनों लोकों में दीपकतुल्य हैं, प्राणीमात्र के लिए अभय दान हैं, ज्ञान रूपी चक्षु प्रदान करते हैं, मोक्षमार्ग देने वाले हैं शरण देने वाले हैं, उन तीर्थंकर की मैं स्तुति करती हूँ।

तीर्थंकर परमात्मा बारह गुणों, चौंतीस अतिशयों व पैंतीस वाणी की विशिष्टताओं से पहचाने जाते हैं। प्रत्येक तीर्थंकर की माता सोलह स्वप्न देखती है।

इन स्वप्नों से यह पूर्वाभास हो जाता है कि किसी तीर्थंकर का जन्म होने वाला है। प्रत्येक तीर्थंकर जन्म से ही तीन ज्ञान के धारक होते हैं। उन्हें वैराग्य के उपदेश की आवश्यकता नही होती। संसार की असारता से वे परिज्ञात होते हैं। वे स्वयं दीक्षित होते हैं और दीक्षा लेते ही उनके मन में पर्यज्ञान हो जाता है। दीक्षा लेकर वे शेष कर्मो को निर्जरित कर केवल ज्ञानी बनते हैं। केवल ज्ञान होते ही वे देवरचित समवसरण में बैठकर देशना देते है और संघ या तीर्थ की स्थापना करते हैं।

तीर्थंकरों के पाँचों कल्याणक गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष 'निर्वाण' कल्याणक संसार के कल्याणक के लिए होते हैं अतः कल्याणक कहलाते हैं।

तीर्थंकर हमारे परम उपकारी, देवाधिदेव, परम वंदनीय, प्रातः स्मरणीय, त्रिकाल ज्ञान के धारक, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी अरिहंत हैं। वे हमारे आदर्श हैं । उनकी पूजा, अर्चना, स्तुति, स्तवन वंदन से हमारे कर्मक्षय होते हैं। उनकी आराधना हमारा कल्याण करती है। उनका पुण्य स्मरण हमें

सर्व संकटों से मुक्त करता है।

जिनेश्वर परमात्माओं के पूजन का फल बताते हुए कहा गया है -

उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः।
मनः प्रसन्नातामेति, पूज्य माने जिनेश्वरे ।।

अर्थात् - श्री जिनेश्वर परमात्मा के पूजन से उपसर्गों का नाश होता है, विघ्न रूपी लताओं का छेदन होता है और मन प्रसन्न होता है।

***

|| अनुक्रमणिका ||

णमोकार मंत्र

णमो अरिहंताणं ।

णमो सिद्धाणं ।

णमो आयरियाणं ।

णमो उवज्झायाणं ।

णमो लोए सव्वसाहूणं ।।

ऐसो पंच णमोकारो सव्व पावप्पणासणो ।

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ।।

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णात्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि।
केवलिपण्णात्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ।।

ॐ नमोऽर्हतेस्वाहा, पुष्पाजलिं क्षिपामि।

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान ।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान ।१।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हन्त देव ।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो बन्दों स्वयमेव ।२।
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरू उवझाय ।
सर्व साधु मंगल करो, बन्दों मन वच काय ।३।
मंगल सरस्वती मातृका, मंगल जिनवर धर्म ।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म ।४।
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत ।
मंगल नाथूराम यह, भव सागर दृढ़ पोत ।५।

***

स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र अत्र अवतर संवौष्ट् आह्वननं ।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र अत्रतिष्ठ ठःठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितों
भववषट् सन्निधिकरणं ।

***

द्रव्याष्टक के अर्घ के मंत्र

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय भवाताप/संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनायपुष्यं निर्व: स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशपाय नैवेद्यं निर्व: स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व: स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वा: स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वा: स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ते अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ के मन्त्र

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय () गर्भमंगल मंडिताय/गर्भ कल्याणक प्राप्ताय अर्घ्य निर्वापामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं श्री महावीर ...... () जन्म मंगल मंडिताय/जन्म कल्याणक प्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं श्री ...... () तपो मंगल मंडिताय/तपो कल्याणक प्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं श्री ...... () केवल ज्ञान मंडिताय/केवल ज्ञान प्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं श्री ...... मोक्ष मंगल प्राप्ताय/मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय अर्घ्य निर्वापामीति स्वाहा ।

***

स्तवन

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरण आयो शरन जी ।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेटो जामन मरन जी ।।१।।
तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी ।
या बुद्धि सेती निज न जाण्यों, भ्रम गिण्यों हितकार जी।।२।।
भव विकट बनमें करम बैरी, ज्ञानधन मेरो हर्यों।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्यो ।।३।।
धन घड़ी यो धन दिवस, यो ही, धन जनम मेरो भयो।
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो ।।४।।
छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरैं।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छवि को हरैं।।५।।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो उर हर्ष ऐसो भयो, मनु रंक चिन्तामणि लयो ।।६।।
मैं हाथ जोड़ नवाऊ मस्तक, विनऊँ तुम चरण जी ।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारन तरन जी ।।७।।
जाचूं नहीं सुरवास पुनि, नर-राज परिजन साथ जी।
'बुध' जाचहूँ तुव भक्ति भव,
भव दीजिये शिवनाथ जी ।।८।।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।
णमो अरिहंताणं, णमोसिद्धाणं, णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।१।
ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मंत्रेभ्यों नमः। (पुष्पांजलि क्षेपन करें)
चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगल, केवलिपण्णात्तो धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णतो धम्मो लोगुत्तमा ।
चत्तारि सरणं पव्वजामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णात्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ।।
ॐ नमोअर्हते स्वाहा, (पुष्पाजलिं क्षेपन करें)
अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंच- नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्यभ्यंतरे शुचिः ।।
अपराजित-मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशनः ।
मगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ।।
एसो पंच - णमोयारो सव्व - पावप्पणासणो ।
मगंलाणं च सव्वेसिं पढ़मं होइ मंगलं ।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ।।
कर्माष्टकविनिर्मुक्त मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं ।
सम्यक्त्वादि - गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ।।
विघ्नौघाः प्रलयं शान्ति, शाकिनी-भूत पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।

***

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरू-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल - मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ।।
ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्म तपज्ञान निर्वाणपंचकल्याण-केभ्यो ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।१।

***

पंचपरमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप सुधूप फलार्घ कैः। ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।२।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।२।
उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घ कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।३।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्र
नामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, श्री अभिनन्दनः ।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः ।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः ।
श्रीधर्मःस्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः ।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः ।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः ।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः ।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

(पुष्पांजलि क्षिपामि)

***

तीस चौबीसी का अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर में नवीना है ।
पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है ।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषै छाजे ।
सात शत बीस जिनराजै, पूजतां पाप सब भाजै ।।१।।

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत दस क्षेत्र के विदेह तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

***

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ

जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रनहूतें थुति पूरी न करी है ।
द्यानत सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार ।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज। ।
ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्योअनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ०निर्व०।

***

चौबीसी का अर्घ सिद्ध परमेष्ठी का अर्घ

जल फल वसुवृन्दा अरघ अमंदा, जजत अनन्दा के कन्दा।
मेटो भवफन्दा सब दुखदन्दा, हीराचन्दा तुम वन्दा ।।
त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी अन्तरयामी अभिरामी।
शिवपुरविश्रामीनिज-निधिपामीसिद्ध-जजामीशिरनामी ।।
ॐ ह्रीं अनाहत-पराक्रमाय सर्ब-कर्म-विनिर्मुक्ताय सिद्ध चक्रधिपतये। सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

***

समुच्चय चौबीसी अर्घ

जल फल आठों शुचिसार, ताकों अर्घ करो ।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरो ।।
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्दकन्द सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही ।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि - वीराँत-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योंअनर्घ पदप्राप्तेय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

***

श्री आदिनाथ का अर्घ

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हर्षाय ।
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ।।
श्री आदिनाथ के चरण कमलपर, बलि बलि जाऊं मनवचकाय।।
हो करुणानिधि भव दुख मेटों, यातै मैं पूजो प्रभु पाय ।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तेय अर्घ० नि० स्वाहा।।

***

श्री वासुपूज्य का अर्घ

जलफल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई ।।
वासुपूज्य वसुपूज्य-तनुज-पद वासव सेवत आई ।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ।।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ निर्व०स्वाहा।।

***

श्री चन्द्र प्रभु जी का अर्घ

जल गंध तंदुल पुष्प चरू ले, दीप धूप फलौघही ।
कन थाल अर्घबनाय शिव सुख 'रामचन्द्र' लहै सही ।।
श्री चन्द्रप्रभु दुतिंचन्द को पद कमल नखससिलगि रह्यो ।।
आतंक दाह निवारी मेरी, अरज सुनि मैं दुख सह्यो ।।
ओ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति

***

अर्घावलि श्री शान्तिनाथ जी

जल फलादि वसु द्रव्य संवारे अर्घ चढ़ाये मंगल गाय ।
'बखत रतन' के तुम ही साहिब दीजे शिवपुर राजकराय।।
शान्ति नाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिन के चरण कमल के पूजे रोग शोक दुख-दारिद्र जाय ।।
ओं ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ निर्व०स्वाहा।

***

अर्घावलि श्री नेमिनाथ

जयफल आदि साजशुचि लीने आठों दरब मिलाय ।
अष्टम छितिके राज करन को, जजों अंग वसुनाय ।।
दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय दाता,
ओं हीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय
अनर्ध्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०स्वाहा ।

***

अर्घावलि श्री पार्श्वनाथ स्वामी

नीर गंध अक्षतान् पुष्प चारू लीजिये।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तें जजीजिये।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।।
ऊँ ही श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घनिर्वपामीति
स्वाहा।

***

अर्घावलि श्री महावीर स्वामी

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों ।
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महाअतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।।
ओ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्व०स्वाहा।

***

सोलह कारण

जल फल आठों दरव चढ़ाय द्यातन वरत करों मनलाय।
परम गुरू हो जय जय नाथ परम गुरू हो ।।
दरशविशुद्धि भावना भाय सोहल तीर्थंकर-पद-दाय ।
परम गुरू हो जय-जय नाथ परम गुरू हो ।।
ओ ह्रीं दर्शनाविशुद्धयदिषोडशकारणेभ्यो ऽनर्घपद प्राप्तये अर्घ निर्व०स्वाहा।

***

दशलक्षणधर्म का अर्घ

आठों दरब संवार 'द्यानत' अधिक उछाहसों।
भव - आताप निवार, दस-लक्षण पूजौं सदा ।।
ओंह्रींउत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।

***

श्री रत्नत्रय अर्घ

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूं ।।
ओं ह्री सम्यक् रत्नत्रयांय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्व०स्वाहा।

***

श्री ऋषि-मण्डल

जल फलादिक द्रव्य लेकर अर्घ सुन्दर कर लिया ।
संसार रोग निवार भगवान् वारि तुम पद में दिया ।।
जहाँ सुभग ऋषिमंडल विराजैं पूजि मन वच तन सदा ।

तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा।।
ओं ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय, रोग शोक-सर्व संकट हराय, सर्वशान्ति-पुष्टि-कराय, श्रीवृषभादि चौबीस तीर्थकर,अष्ट वर्ग अरहंतादि पंचपद, दर्शन-ज्ञान-चरित्र, चतुर्णिकाय देव, चार प्रकार अवधिधारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि संयुक्त ऋषि-बीस चार सूर, तीन ह्री अर्हंतबिम्ब, दशदिग्पाल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

***

पंचमेरू जिनालय अर्घ

आठ दरबमय अरघ बनाय, द्यानत पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।
पाँचो मेरूं असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम।
महासुख होय देखे नाथ परम सुख होय ।।
ओं ह्री सुदर्शन विजय-अचल-मंदिर-विद्युन्मालि-पंचमेरू सम्बन्धित जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यों अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

***

नन्दीश्वरद्वीप जिनालय अर्घ

यह अरघ कियो निज-हेतू तुमको अरपित हों।
'द्यानत' कीज्यो शिव-खेत, भूमि समरपित हों ।।
नन्दीश्वर श्री जिनधाम बावन पुँज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्द भाव धरों।।

ओं ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपच्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्या अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

***

श्री सम्मेद शिखर जी अर्घ

श्री सम्मेद शिखार शिवपुर के द्वार जी।
बीस जिनेश्वर मुक्ति भये भवतार जी ।।
तिनि के चरण जजों मैं मन वच काय कै।
भवदधि उतरों परा शरण तुम आय कै।।

ओं ह्री सम्मेद शिखर सेती श्री बीस तीर्थंकर मुक्ति पधारे और उस शिखरतें और मुनि मुक्ति पधारें होहि तिनि को अर्घ निर्व० स्वाहा ।।

श्री सोना गिरी क्षेत्र अर्घ

नंगानंग कुमार दोय राजकुमार जू ।
मुक्ति भये सोनागिर जग हितकार जू ।।
साढ़े पाँच कोडि भये शिवराज जी।
पूजों मन वच काय लहो सुखराज जी ।।

ओं ह्री सोनागिरी पर्वत सेति नंगानंग कुमारादि साढ़े पाँच कोडि मुनि मुक्ति पधारे तिनको अर्घ महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

***

श्री गिरनार क्षेत्र पर्वत अर्घ

श्री गिरनार शिखार जग में विख्यात जी।
सिद्ध वधु के नाथ भये नेमिनाथ जी।।
तिनि के चरणजजूँ मैं मन वच काय के।
भवदधि उतरों पार शरण तुम आय के।।

ओं ह्री गिरनार शिखर सेती श्री नेमिनाथ तीर्थंकर पाँच सौ छत्तीस मुनि सहित मुक्ति पधारे और बहत्तर कोडि सात सौ मुनि मुक्ति पधारे तिनको अर्घ महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

श्री चंपापुर क्षेत्र अर्घ

चंपापुर ते मुक्ति भये जिनराज जी।
वासुपूज्य महाराज करम क्षयकारजी।।
तिनि के चरण जजों मैं मन वच कायके।
भवदधि उतरों पार शरण तुम आय के।।
ओं ह्री चंपापुर सेती श्री वासुपूज्य तीर्थंकर हजार मुनि सहित मुक्ति पधारे और वहाँ ते और मुनि मुक्ति पधारे होहि तिनको अर्घ महार्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

***

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अर्हत पूजूं सिद्ध पूजूं चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूं साधु पूजूं भव सों ।।१।।
अर्हंत-भाषित बैनं पूजूं द्वादशांग रचे गनी।
पूजूं दिगम्बर गुरूचरण शिवहेतू सब आशा हनी ।।२।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया मय पूजूं सदा।
जजूं भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहीं कदा ।।३।।
त्रैलौक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पन मेरू नन्दीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूँ ।।४।।

कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा ।।५।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसु जपि होय पति शिवगेह के ।।६।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरू दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूज हूं बहु विधि भक्ति बढ़ाय ।।७।।
ओं ह्रीं समुच्चम सिद्धक्षेत्र देवम् मधर्ध निर्वपामीति स्वाहा।

***

श्री देव शास्त्र गुरू, विद्यमान बीस तीर्थंकर, अनन्तानन्त सिद्ध समूह की समुच्चय पूजा

दोहा- देव शास्त्र गुरू नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय ।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूं चित्त हुलसाय ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूसमूह !श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह! श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी समूह!अत्रावतरावतर संवौषट् ('आह्वाननं')।
ॐ ह्रीं श्री देव........अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ('स्थापनम्')।
ॐ ह्रीं श्री देव.....अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ('सन्निधि -करणम्')।

अष्टक

अनादिकाल से जग में स्वामिन्, जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय, निधि को नहिं पहिचाना।।
अब निर्मल रत्नत्रय जल ले, देव शास्त्र गुरू को ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं।

ॐ ह्रीं श्रीं देव शास्त्र गुरूभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।1।

भव आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने अब तक मैंने, पर में की झूठी ममता है ।।
चन्दन सम शीतलता पाने, श्री देव शास्त्र गुरू को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभू के गुण गाऊं ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरूभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यः संसार-ताप-विनाशनायचंन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।2।

अक्षय पद बिन फिरा जगत की लख चौरासी योनी में।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिंग लाया मैं।।
अक्षय निधि निज को पाने को देव शास्त्र गुरू को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरूभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।3।

पुष्प सुगन्धी से आतम ने शील स्वभाव नशाया है ।
मन्मथ वाणों से बिंध करके, चहुं गति दुख उपजाया है ।।
स्थिरता निज में पाने को, श्री देव शास्त्र गुरू को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरूभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यः कामबाण - विध्यंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाह ।।४।

षट रस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शांत हुई।
आतम रस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई ।।
सर्वथा भूख के मेटनको, श्री देव शास्त्र गुरू को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थकंर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ।।
ॐ ह्रीं *श्री देव शास्त्र गुरूभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठि भ्यः क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामति स्वाहा ।५।*

जड़ दीप विनश्वर को अब तक, समझा था मैंने उजियारा ।।
निज गुण दरशायक ज्ञान दीप से, मिटा मोह का अंधियारा ।।
ये दीप समर्पित करके मैं, श्री देव शास्त्र गुरू को ध्याऊं।

विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरूभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यः मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।६।

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी ।
निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नशायेगीं ।
उस शक्ति दहन प्रगटाने को,श्री देव शास्त्र गुरू को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थकंर, सिद्ध प्रभू के गुण गाऊं ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरूभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यः अष्ट कर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।७।

पिस्ता बदाम श्रीफल लवंग, चरणन तुम ढिंग मै ले आया ।
आतमरस भीने निज गुण फल मम मन अब उनमें ललचाया ।।
अब मोक्ष महा फल पाने को श्री देव शास्त्र गुरू को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरूभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः श्री अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोक्षफल प्राप्तयेफलंनिर्वपामीति स्वाहा ।८।

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निज गुण प्रकट किए ।।
ये अर्घ सर्मपण करके मैं, श्री देवशास्त्र गुरू को ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ।।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरूभ्यः श्री विद्यमान विशंति तीर्थंकरेभ्यः श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।६।

***

जयमाला

दोहा–देव शास्त्र गुरू, बीस जिन, सिद्ध अनन्तानंत ।
गाऊंगुण जयमालिका भवदुःख नसैं अनन्त ।।
नसे घातिया कर्म अर्हंत देवा, करें सुरअसुर नर मुनि नित्य सेवा ।
दरश ज्ञान सुख बल अनन्तके स्वामी छियालीस गुण युत महाईश नामी ।
तेरी दिव्यवाणी सदा भव्यमानी, महामोह विध्वंसिनी मोक्षदानी ।।
अनेकान्त मय द्वादशांगी बखानी, नमो लोक माता श्री जैन वाणी ।
विरागी अचारज उवज्झाय साधू, दरश ज्ञान भण्डार समता अराधू ।

नगन वेशधारी सुएका विहारी, निजानन्द मंडित मुक्ति पथप्रचारी।
विदेह क्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजें, विहरमान वंदू सभी पाप भाजें ।।
नमूं सिद्ध निर्भयनिरामय सुधामी, अनाकुल समाधान सहजाभिरामी
छन्द-देव शास्त्र गुरू बीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धरले रे ।
पूजन ध्यान गान-गुण करके, भव सागर जिय तर ले रे ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरूभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूत भविष्यत् वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊं ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊं ।।

ॐ ह्रीं त्रिकाल सम्बन्धी तीस चौबीसी त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत्य भक्ति आलोचन चाहूँ कायोत्सर्ग अघ नाशन हेतु।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिन बिम्ब अनेक ।
चतुर निकाय के देव जजें, ले अष्टद्रव्य निज भक्ति समेत ।
निज शक्ति अनुसार जजूं मै, कर समाधि पाऊं शिव खेत ।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमा कृत्रिम चैत्यालयसम्बन्धी

जिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।
पूर्वमध्य अपराह्न की बेला, पूर्वाचार्यो के अनुसार ।
देव वन्दना करूं भाव से सकल कर्म की नाशन हार ।।
पंच महा गुरू सुमिरन करके, कायोत्सर्ग करूं सुखकार ।।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना जाऊँगा अब मैं भव पार ।।
'पुष्पांजलि क्षेपण कर नौ बार णमोकार मंत्र जपे :

***

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा (श्री मुगल जी)

केवल-रवि-किरणों से जिसका, सम्पूर्ण प्रकाशित है अन्तर ।
जिस श्री जिनवाणी में होता, तत्वों का सुन्दरतम दर्शन ।
सुदर्शन-बोध-चरण-पथ पर, अविरल जो बढ़ते हैं मुनिगण ।
उनदेवपरम-आगम-गुरु को, शत्-शत् वंदन शत्-शत् वंदन।।
ॐ ह्री श्री देव शास्त्र गुरुसमूह अत्र अवतर, अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्री श्री देवशास्त्र गुरुसमूह अत्र मम

सन्निहितो भव भव वषट्।

इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम,लावण्यमयी कंचन काया। यह सब कुछ जड़ की क्रीड़ा है,मैं अबतक जान नहीं पाया । मैं भूल स्वयं के वैभव को,पर ममता में अटकाया हूँ। अब निर्मल सम्यक् नीर लिये, मिथ्या मल धोने आया हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्र गुरुभ्य: जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा०।१।

जड़ चेतन की सब परिणति प्रभु ! अपने-अपने में होती है। अनुकूल कहें प्रतिकूल कहें, यह झूठी मन की वृत्ति है। प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित, होकर संसार बढ़ाता है। संतप्त हृदय प्रभु! चन्दन सम, शीतलता पाने आया है।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्य: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं नि०स्वाहा।२।

उज्जवल हूँ कुन्द धवल हूँ प्रभु ! पर से न लगा हूँ किंचित भी। फिर भी अनुकूल लगें उनपर, करता अभिमान निरन्तर ही। जड़ पर झुक-झुक जाता चेतन, नश्वर वैभव को अपनाया । निज शाश्वत अक्षय-निधि पाने,

अब दास चरण-रज में आया।।

ॐ ह्री श्री देवशास्त्र गुरुभ्यः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व०स्वाहा।३।

यह पुष्प सुकोमल कितना है, तन में माया कुछ शेष नहीं ।
निज अन्तर का प्रभु भेद कहूँ, उसमें ऋजुता का लेश नहीं।
चिंतन कुछ, फिर सम्भाषण कुछ, क्रिया कुछ की कुछ होती है।
स्थिरता निज में प्रभु पाऊँ जो, अन्तर का कालुष धोती है।।

ॐ ह्री श्री देवशास्त्र गुरुभ्यः कामबाण विनाशनाय पुष्पंनिर्व० स्वाहा।४।

अब तक अगणित जड़ द्रव्यों से, प्रभु भूख न मेरी शांत हुई।
तृष्णा की खाई खूब भरी,पर रिक्त रही वह रिक्त रही।
युग युग से इच्छा सागर में प्रभु! गोते खाता आया हूँ।
पंचेन्द्रिय मन के षट्रस तज, अनुपम रस पीने आया हूँ।

ॐ ह्री श्री देवशास्त्र गुरुभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व०स्वाहा।५।

मेरे चैतन्य सदन में प्रभु! व्याप्त भयंकर अंधियारा ।
श्रुत-दीप बुझा हे करूणानिधि ! बीती नहीं कष्टों की कारा ।

अतएव प्रभो! यह ज्ञान-प्रतीक, समर्पित करने आया हूँ ।
तेरी अन्तर लौ से निज अन्तर दीप जलाने आया हूँ ।।
ॐ ह्री श्री देवशास्त्र गुरुभ्य: मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०स्वाहा।६।
जड़ कर्म घुमाता है मुझको,यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी।
मैं राग-द्वेष किया करता, जब परिणित होती जड़ मेरी ।
यो भाव करम या भाव मरण,युग युग से करता आया हूँ ।
निज अनुपम गंध अनल से प्रभु,पर गंध जलाने आया हूँ।
ॐ ह्री श्री देवशास्त्र गुरुभ्य: अष्टकर्म दहनाय धूप निर्व० ।७। जग में जिसको निज कहता मैं,वह छोड़ मुझे चल देताहै।
मैं आकुल व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता है।
मैं शांत निराकुल चेतन हूँ, है मुक्ति रमा सहचरि मेरी,
यह मोह तड़क कर टूट पड़े प्रभु!सार्थक फल पूजा तेरी।।
ॐ ह्री श्री देवशास्त्र गुरुभ्य: मोक्ष फलं निर्व०।८।
क्षणभर निस को पी चेतन, मिथ्या मल को धो देता है।
काषायिक भाव विनष्ट किये निज आनन्द अमृत पीता है
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल रवि जगमग करता

है दर्शन बल पूर्ण प्रकट होता, यह ही अर्हंत अवस्था है।।
यह अर्घ्य समपर्ण करके प्रभु! निज गुण का अर्घ्य बनाऊंगा।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु! अर्हंत अवस्था पाऊंगा।।
ऊँ ह्री श्री देवशास्त्र गुरुभ्य: अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व०।

***

जयमाला - बारह भावना स्तवन

भव वन में जी भर घूम चुका, कण कण को जी भर भर देखा।
मृग-सम मृग तृष्णा के पीछे,
मुझको न मिली सुख की रेखा ।१।
झूठे जग के सपने सारे, झूठी मन की सब आशायें ।।
तन-जीवन-यौवन अस्थिर हैं। क्षण भंगुर पल में मुरझायें।२।
सम्राट महाबली सेनानी, उस क्षण को टाल सकेगा क्या।
अशरण मृत काया में हर्षित, निज जीवन डाल सकेगा क्या।३।
संसार महादुःख सागर के,प्रभु दुःखमय सुख आभासों में।
मुझको न मिला सुख क्षणभर भी,
कंचन - कामिनि - प्रासादों में ।४।

मैं एकाकी एकत्व लिए,एकत्व लिए सब ही आते ।
तनधन को साथी समझा था, पर वे भी छोड़ चले जाते ।५।
मेरे न हुए ये मैं इनसे,अति भिन्न अखण्ड निराला हूँ।
निज में पर से अन्यत्व लिए, निज सम रस पीने वालाहूँ।
जिसके श्रृंगारों में मेरा, यह मंहगा जीवन घुल जाता ।
अत्यन्त अशुचि जड़ काया से,इस चेतन का कैसा नाता ।७।
दिन रात शुभाशुभ भावों से मेरा व्यापार चला करता ।
मानस वाणी और काया से, आस्रव का द्वार खुला रहता ।८।
शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अन्तस्थल।
शीतल समकित किरणें फूटें, संवर से जागे अन्तर्बल ।९।
फिर तप की शोधक वह्नि जगे, कर्मो की कड़ियाँ टूट पड़ें।
सर्वाड्.ग निजात्म प्रदेशों से, अमृत के निर्झर फूट पड़े ।१०।
हम छोड़ चलें यह लोक तभी,लोकांत विराजें क्षण में जा।
निज लोक हमारा वासा हो,
फिर भव बन्धान से हमको क्या ।११।
जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो! दुर्नयतम सत्वर टल जावे।
बस ज्ञाता-दृष्टा रह जाऊं, मद-मत्सर मोह-विनश जावे।१२।

चिर रक्षक धर्म हमारा हो,हो धर्म हमारा चिर साथी ।
जग में न हमारा कोई था,हम भी न रहें जग के साथी।१३।

देव-स्तवन

चरणों में आया हूँ प्रभुवर, शीतलता मुझको मिल जावे ।
मुरझाई ज्ञान लता मेरी, निज अन्तर्बल से खिल जावे।१४।
सोचा करता हूँ भोगों से, बुझ जावेगी इच्छा ज्वाला ।
परिणाम निकलता है लेकिन, मानों पावक में घी डाला।१५।
तेरे चरणों की पूजा से, इन्द्रिय सुख की ही अभिलाषा।
अब तक न समझ ही पाया प्रभु !
सच्चे सुख की भी परिभाषा (१६)
तुम तो अविकारी हो प्रभुवर! जग में रहते जग से न्यारे।
अतएव झुके तव चरणों में, जग के माणिक मोती सारे।१७।

शास्त्र स्तवन

स्याद्वाद मयी तेरीवाणी, शुभनय के झरने झरते हैं।
उस पावन नौका पर लाखों, प्राणी भव-वारिधि तिरतेहैं ।१८।

गुरु स्तवन

हे गुरुवर! शाश्वत सुख-दर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा दिग्दर्शन करने वाला है ।१६।
जब जग विषयों में रच पच कर, गाफिल निद्रा में सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कंटक,
पथ में विष-कंटक बोता हो।२०।
हो अर्ध निशा का सन्नाटा, वन में वनचारी चरते हों ।
तब शान्त निराकुल मानस तुम,तत्वों का चिंतन करते हो।२१।
करते तप शैल नदी तट पर,तरु तल वर्षा की झड़ियों में
समता रस पान किया करते,
सुख दुख दोनों की घड़ियों में ।२२।
अन्तर ज्वाला हरती वाणी, मानों झड़ती हों फुलझड़ियां।
भव बन्धन तड़ तड़ टूट पड़ें,
खिल जावें अन्तर की कलियां।२३।
तुम सा दानी क्या कोई हो, जग को देदीं जग की निधियां।
दिन रात लुटाया करते हो,सम-शम की अविनश्वर मणियां।२४।
हे निर्मल देव ! तुम्हें प्रणाम, हे ज्ञान दीप आगम! प्रणाम।
हे शान्ति त्याग के मूर्तिमान, शिव-पंथ-पथी गुरुवर ! प्रणाम।।
ऊँ ह्री श्री देवशास्त्र गुरुभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री आदिनाथ जिन पूजा

नाभिराय मरूदेवी के नंदन, आदिनाथ स्वामी महाराज ।
सर्वारथसिद्धितैं आप पधारे, मध्य लोक माहिं जिनराज ।।
इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज ।
आह्वानन सब विधि मिल करके,अपने कर पूजें प्रभुपाद।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

क्षीरोदधि को उज्जवल जल ले, श्रीजिनवर पद पूजन जाय।
जन्म जरा दुख मेटन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजीके पाय।।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय
हो करूणा निधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय
ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ।१।

मलयागिरि चदंन दाह-निकंदन, कंचन झारी में भर ल्याय।
श्रीजीके चरण चढ़ावो भविजन, भव आताप तुरत मिटजाय।श्री०
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व० ।२।
शुभशालि अंखडित सौरभमंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय।
श्रीजीके चरणचढ़ावो भविजन, अक्षय पदको तुरत उपाय। श्री०
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० ।३।
कमल केतकी बेल चमेली, श्रीगुलाब के पुष्प मंगाय ।
श्रीजीके चरणचढ़ावो भविजन, कामबाण तुरत नसिजाय।श्री०
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाण- विध्वंसनाय पुष्पं नि० ।४।
नेवज लीना तुरत रस भीना, श्री जिनवर आगे धरवाय।
थाल भराऊ क्षुधा नसाऊं, जिन गुण गावत मन हरषाय।।श्री०
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।५।
जगमग जगमग होत दसौं दिश,ज्योति रही मंदिर में छाय ।
श्रीजीके सन्मुख करत आरती मोह तिमिर नासे दुखदाय। श्री०
श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ।६।
अगर कपूर सुगंध मनोहर चंदन कूट सुगंध मिलाय।

श्रीजीके सन्मुख खेय धुपायन, कर्मजरे चहुंगति मिटिजाय। श्री०
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० ।७।

श्रीफल और बादाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय।
महामोक्ष फल पावन कारन, ल्याय चढ़ाऊं प्रभुजी के पाय ।श्री०
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० ।८।

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ।।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊ मन वच काय ।
हो करूणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय ।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०।९।

पंचकल्याणक अर्घ्यावलि

दोहा:- सर्वारथ सिद्धि तैं चये, मरूदेवी उर आय ।
दोज असित आषाढ़ की, जजूँ तिहारे पाय ।।

ॐ ह्रीं श्रीआषाढ़-कृष्णा-द्वितीयायां गर्भ-कल्याणक-प्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत वदी नौमी दिना, जन्म्या श्री भगवान ।
सुरपति उत्सव अति करा, मैं पूजौं धरि ध्यान ।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिजिनाय अर्घ्यं०।

तृणवत् ऋद्धि सब छांडिके तप धार्यो वन जाय।
नौमी चैत्र असेत की जजूँ तिहारें पाय ।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां तप कल्याणकप्राप्ताय श्री आदिजिनाय अर्घ्यं०।

फाल्गुन वदि एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान ।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजों यह थान ।।

ॐ ह्रीं श्री फाल्गुनकृष्णा-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ चतुर्दशि कृष्ण की, मोक्ष गये भगवान् ।
भवि जीवों को बोधि के, पहुँचे शिवपुर थान ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिजिनाय अर्घ्यं० निर्वपामीतिस्वाहा ।।

जयमाला

आदिश्वर महाराज, मैं विनती तुम से करूं,
चारों गति के माहि, मैं दुख पायो सो सुनों ।
अष्ट कर्म मैं एकलो यह दुष्ट महादुख देत हो,
कबहुं इतर निगोद में मोकूँ पटकत करत अचेत हो ।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।१।
प्रभु! कबहुकंपटक्यो नरक में, जठे जीव महादुख पाय हो,
निष्ठुर निरदई नारकी, जठे करत परस्पर घात हो ।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।२।
प्रभु! नरकतणा दुख अब कहूँ, जठे करत परस्पर घात हो,
कोइयक बाध्यो खंभसों पापी दे मुग्दर की मार हो ।।
कोइयक काटे करोत सों, पापी अगंतणी दोय फाड़ हो ।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।३।
प्रभु! इहविधि दुख भुगत्या घणां, फिर गति पाई तिरियचं हो,
हिरणा बकरा बाछला पशु दीन गरीब अनाथ हो ।
पकड़ कसाई जालमें, पापी काट काट तन खाय हो ।

म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।४।
प्रभु! मै ऊँट बलद भैंसा भयो, जापै लाद्रियो भार अपार हो।
नही चाल्यो जब गिर पर्‌यो, पापी दें सोंटन की मार हो।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।५।
प्रभु! कोइयक पुण्य संयोग सूं मैं तो पायो स्वर्ग निवास हो।
देवांगना संग रमि रह्यो, जठे भोगनि को परकास हो ।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।६।
प्रभु! संग अप्सरा रम रह्यौ, कर कर अति अनुराग हो ।
कबहुंक नदंन-वनविषैं, प्रभु कबहुंक वनगृह माहिं हो ।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।७।
प्रभु! यहि विधि काल गमायके, फिर माला गई मुरझाय हो ।
देव थिति सब घट गई, फिर उपज्यो सोच अपार हो ।
सोच करतां तन खिर पड़यो, फिर उपज्यो गरभ में जाय हो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।८।
प्रभु! गर्भतणा दुख अब कहूँ, जठे सकुड़ाई की ठौर हो ।
हलन चलन नाहिं कर सक्यो जठे सघन कीच घनघोर हो ।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।९।

प्रभु! माता खावे चरपरो फिर लागे तन संताप हो ।
प्रभु! जो जननी तातो भखै, फेर उपजै तन संताप हो ।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।१०।
प्रभु! औधें मुख झूल्यो रह्यो फेर निकसन कौन उपाय हो ।
कठिन कठिन कर नीसरो, जैसे निसरै जंत्री में तार हो ।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।११।
प्रभु! निकसत ही धरत्यां पड्यो, फिर लागी भूख अपार हो।
रोय रोय बिलख्यो धनो, दुख वेदनको नहिं पार हो ।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।१२।
प्रभु! दुख मेटन समरथ धनी, यातैं लागूं तिहारे पांय हो ।
सेवक अर्ज करै प्रभु, मोकूं भवोदधि पार उतार हो ।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।१३।
दोहा - श्री जी की महिमा अगम है, कोई न पावै पार ।
मैं मति अल्प अज्ञान हूँ, कौन करे विस्तार ।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
विनती ऋषभ जिनेश की, जो पढ़सी मन ल्याय ।
सुरगों में संशय नहीं, निश्चय शिवपुर जाय ।।
इत्याशीर्वादः पुष्पाजलिं क्षिपेत् ।

श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजा 'देहरा'

शुभ पुण्य उदय से ही प्रभुवर, दर्शन तेरा कर पाते हैं।
केवल दर्शन से ही प्रभु, सारे पाप मेरे कट जाते है।
देहरे के चन्द्रप्रभु स्वामी, आह्वानन करने आया हूँ।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो तेरे चरणों मे आय हूँ।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ('आत्वाननं ') ।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ('स्थापनं')

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ('सन्निधिकरणं ')

अथाष्टक

भोगों में फँसकर हे प्रभुवर, जीवन को वृथा गंवाया है ।
इस जन्म-मरण से मुझे नहीं, छुटकारा मिलने पाया है।
मन में कुछ भाव उठे मेरे, जल झारी में भर लाया हूँ।
मन के मिथ्या मल धोने को, चरणो में तेरे आया हूँ ।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निःस्वाहा ।1।

निज अन्तर शीतल करने को,चन्दन घिसकर ले आया हूँ।
मन शान्त हुआ ना इससे भी, तेरे चरणों में आया हूँ ।
क्रोधादि कषायों के कारण, संतप्त हृदय प्रभु मेरा है।
शीतलता मुझको मिल जाये, हे नाथ सहारा तेरा है।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा ।2।

पूजा में ध्यान लगाने को, अक्षत धोकर ले आया हूँ।
चरणों में पुजं चढाकर के अक्षयपद पाने आया हूँ ।
निर्मल आत्मा होवे मेरी, सार्थक पूजा तब तेरी हैं ।
निज शाश्वत अक्षयपद पाऊँ ऐसी प्रभु विनती मेरी है।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा ।3।

पर गधं मिटाने को प्रभुवर, यह पुष्प सुगंधी लाया हूँ।
तेरे चरणों में अर्पित कर, तुमसा ही होने आया हूँ ।
श्री चन्द्रप्रभु यह अरज मेरी भवसागर पारलगा देना।
यह काम अग्नि का रोग बड़ा, छुटकारा नाथ दिला देना।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा ।4।

दुख देती है तृष्णा मुझको, कैसे छुटकारा पाऊँ मैं ।

हे नाथ बता दो आज मुझे, चरणों में शीश झुकाऊँ मैं ।
यह क्षुधा मिटाने को प्रभुवर, नैवेद्य बनाकर लाया हूँ।
हे नाथ मिटा दो क्षुधा मेरी, भव भव में फिरता आया हूँ।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि० स्वाहा।५।

यह दीपक की ज्योति प्यारी,अंधियारा दूर भगाती है ।
पर यह भी नश्वर है प्रभुवर,झंझा इसको धमकातीहै।
हे चन्द्रप्रभु दे दो ऐसा दीपक अज्ञान मिटा डाले ।
मोहान्धकार हो नष्ट मेरा यह, ज्योति नई मन है बाले ।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।६।

शुभ धूप दशांग बना करके, पावक में खेऊँ है प्रभुवर ।
क्षय कर्मो का प्रभु हो जावे, जग का झंझट सारा नश्वर।।
हे चन्द्रप्रभु अन्तर्यामी, कैसे छुटकारा अब पाऊँ ।
हे नाथ बता दो मार्ग मुझे, चरणों पर बलिहारी जाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।७।

पिस्ता बादाम लवंगादिक, भर थाली प्रभु मैं लाया हूँ।
चरणों में नाथ चढ़ा करके, अमृत रस पीने आया हूँ।
करूणा के सागर दया करो, मुक्ति का मार्ग अब पाऊँ ।
दे दो वरदान प्रभु ऐसा, शिवपुर को हे प्रभुवर जाऊँ
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा ।८।
जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू, दीपक घृत से भर लाया हूँ ।
दस गंध धूप फल मिला अर्घ ले, स्वामी अति हरषाया हूँ ।
हे नाथ अनर्घ्य पदपाने को, तेरे चरणों में आया हूँ ।
भव भव के बंध कटें प्रभुवर, यह अरज सुनाने आया हूँ
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्य नि० स्वाहा।९!

पंचकल्याणक अर्घ्यावलि

जब गर्भ मे प्रभुजी आये थे, इन्द्रो ने नगर सजाया था।
छः मास प्रथम ही आकर के, रत्नों का मेह बरसाया था।
तिथि चैत्र वदी पंचम प्यारी, जब गर्भ में प्रभुजी आये थे।
लक्ष्मणा माता को पहले ही, सोलह सपने दिखलाये थे।।
ॐ ह्रीं श्री चैत्र कृष्णापंचम्यां गर्भमंगल

मंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य नि०।१।

शुभ बेला में प्रभु जन्म हुआ, वदि पौष एकादशि थी प्यारी।
श्री महासेन नृप के घर में हुई, जय जय कार बड़ी भारी।।
पाडुंकशिला पर अभिषेक कियौ, सब देव मिले थे चतुर्निकाय।
सो जिनचन्द्र जयो जग मांही, विघ्नहरण और मंगलदाय ।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्म मंगल मंडिताय श्रीचन्दं० अर्घ्य नि० ।२।

जग के झंझट से मन उबा, तप की ली प्रभुजी ने ठहराय।
पौष वदी ग्यारस को इन्द्र ने, तप कल्याण कियो हरषाय।
सर्वर्तुक वन नें जाय विराजे केशलोंच जिन कियो हरषाय।
देहरे के श्री चन्द्रप्रभु को अर्ध्य चढ़ाऊँ नित्य बनाय ।

ॐ ह्रीं श्री पौषकृष्णा एकादश्यां तपो मंगल मंडिताय श्री चन्दं व अर्घ्य नि० ।३।

फाल्गुन वदी सप्तमी के दिन, चार घातिया घात महान
समवशरण रचना हरि कीनी, ता दिन पायो केवल ज्ञान।
साढ़े आठ योजन परमित था, समवशरण श्री जिन भगवान।
ऐसे श्री जिन चन्द्रप्रभु को, अर्ध्य चढ़ाय करूं नित ध्यान ।

ॐ ह्रीं श्री फाल्गुन कृष्णा सप्तम्यां केवल ज्ञान मंडिताय श्री चन्द्र० अर्घ्य नि० ।४।

शुक्ला फाल्गुन सप्तमि के दिन, ललितकूट शुभ उत्तम थान।
श्री जिन चन्द्रप्रभु जगनामी, पायो आतम शिव कल्याण।
वसु कर्म जिन चन्द्र ने जीते, पहुँचे स्वामी मोक्ष मंझार।
निर्वाण महोत्सव कियो इन्द्र ने, देव करें सब जय जयकार।
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रायअर्घ्यनिर्वपामीतिस्वाहा ।५।

श्रावण सुदी दशमी को प्रभुजी, प्रकट भये देहरे में आन ।
संवत तेरह दो सहस्त्र ऊपर, शुभ गुरूवार को ता दिन जान ।।
जय जयकार हुई देहरे में, प्रकट हुए जब श्री भगवान ।
चरणों में आ अर्घ्य चढ़ाऊँ, प्रभु के दर्शन सुख की खान ।
ॐ ह्रीं श्री श्रावण शुक्ला दशम्यां देहरा स्थाने प्रकट रूपाय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।६।

जयमाला

हे चन्द्रप्रभु तुम जगतपिता, जगदीश्वर तुम परमात्मा हो ।
तुम ही हो नाथ अनाथों के,
जग को निज आनंद दाता हो ।१।

इन्द्रियों को जीत लिया तुमने, जितेन्द्र नाथ कहाये हो ।
तुम ही हो परम हितैषी प्रभु गुरू,
तुम ही नाथ कहाये हो ।२।
इस नगर तिजारा में स्वामी, देहरा स्थान निराला है ।
दुख दुखियों का हरने वाला, श्री चन्द्र नाम अति प्यारा है ।३।
जो भाव सहित पूजा करते, मनवांछित फल पा जाते है।
दर्शन से रोग नसे सारे, गुन-गान तेरा सब गाते है।४।
मैं भी हूँ नाथ शरण आया कर्मो ने मुझको रौंदा है ।
यह कर्म बहुत दुख देते हैं प्रभु एक सहारा तेरा है ।५।
कभी जन्म हुआ कभी मरण हुआ,
हे नाथ बहुत दुखा पाया है ।
कभी नरक गया कभी स्वर्ग गया,
भ्रमता भ्रमता ही आया है ।६।
तिर्यच गति के दुःख सहे, ये जीवन बहुत अकुलाया है ।
पशुगति में मार सही भारी, बोझा रख खूब भगाया है ।७।
अंजन से चोर अधम तारे, भव सिन्धु से पार लगाया है ।
सोमा की सुन कर टेर, प्रभु नाग को हार बनाया है ।८।

मुनि समन्तभद्र को हे स्वामी, आ चमत्कार दिखलाया है ।
कर चमत्कार को नमस्कार, चरणों में शीश झुकाया है ।९।
इस पंचमकाल में हे स्वामी, क्या अद्भुत महिमा दिखलाई ।
दुःख दुखियों का हरने वाली, देहरे में प्रतिमा प्रकटाई ।१०।
शुभ पुण्य उदय से हे स्वामी, दर्शन तेरा करने आया हूँ ।
इस मोह जाल से हे स्वामी, छुटकारा पाने आया हूँ ।११।
श्री चन्द्रप्रभु मोरी अर्ज सुनो चरणों में तेरे आया हूँ ।
भवसागर पार करो स्वामी यह अर्ज सुनाने आया हूँ ।१२।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय पूर्णार्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
दोहा-देहरे के श्री चन्द्र को भाव सहित जो ध्याय ।
मुंशी पावे सम्पदा मनवांछित फल पाय ।
इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

श्री पद्मप्रभु जिन पूजा 'बाड़ा'

दोहा-श्रीधर नन्दन पद्म प्रभु, वीतराग जिन नाथ ।
विघ्न हरण मंगल करन, नमों जोरि जुग हाथ ।।
जन्म महोत्सव के लिए, मिलकर सब सुरराज ।
आये कौशाम्बी नगर, पद पूजा के काज ।।
पद्मपुरी में पद्मप्रभु, प्रकटे प्रतिमा रूप ।
परम दिगम्बर शान्तिमय, छवि साकार अनूप ।।
हम सब मिल करके यहां, प्रभु पूजा के काज ।
आह्वान करते सुखद, कृपा करो महाराज ।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

क्षीरोदधि उज्जवल नीर, प्रासुक गन्ध भरा ।
कच्चन झारी में लेय, दीनी धार धरा ।।

बाड़ा के पद्म जिनेश, मंगल रूप सही ।
काटो सब क्लेश महेश, मेरी अर्ज यही ।।
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा ।१।

चन्दन केशर कपूर, मिश्रित गन्ध धरो ।
शीतलता के हित देव, भव आताप हरो ।। बाड़ा०
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा ।२।

ले तन्दुल अमल अखण्ड, थाली पूर्ण भरो ।
अक्षय पद पावन हेतु, हे प्रभु पाप हरो ।।
बाड़ा०
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा ।३।

ले कमल केतकी बेल, पुष्प धरूं आगे ।
प्रभु सुनिये हमरी टेर, काम कला भागे ।। बाड़ा०
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभजिनेन्द्राय काम-बाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा ।४।

नैवेद्य तुरत बनवाय, सुन्दर थाल सजा ।
मम क्षुधारोग नश जाय, गाऊँ वाद्य बजा ।।
बाड़ा के पद्म जिनेश, मंगल रूप सही ।
काटो सब क्लेश महेश, मेरी अर्ज यही ।।
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।५।

हो जगमग-जगमग ज्योति, सुन्दर अनियारी ।
ले दीपक श्री जिनचन्द्र, मोह नशे भारी ।।
बाड़ा०
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा ।६।

ले अगर कपूर सुगन्ध, चन्दन गन्ध महा।
खेवत हों प्रभु ढिंग आज, आठों कर्म दहा।। बाड़ा०
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।७।

श्रीफल बादाम सुलेय, केला आदि हरे ।
फल पाऊँ शिवपद नाथ, अरपूं मोद भरे ।। बाड़ा०

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं ।
निर्व० स्वाहा ।८।

जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज आदि मिला ।
मैं अष्ट द्रव्य से पूज, पाऊँ सिद्ध शिला ।। बाड़ा०

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्य पद-प्राप्तये अर्घ्य निर्व० स्वाहा ।९।

चरणों का अर्घ्य

दोहा- चरण कमल श्री पदम् के, वन्दौं मन वच काय ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भाव से, कर्म नष्ट हो जाय। बाड़ा०।

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभजिनेन्द्राय चरणाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रतिमाजी की अप्रकट अवस्था का अर्घ्य

पृथ्वी में श्री पद्मासन, पद्मासन आकार ।
परम दिगम्बर शान्तिमय प्रतिमा भव्य अपार ।।
सौम्य शान्त अति कान्तिमय, निर्विकार साकार ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले पूजूं विविध प्रकार ।। बाड़ा०

ॐ ह्रीं भूमस्थित अप्रकट श्री पद्मप्रभ जिनबिम्बाय अर्घ्यं । निर्व० स्वाहा ।

पंच कल्याणक अर्घ्यावलि

श्री पद्मप्रभ जिनराज जी मोहे राखो हो शरना ।
माघ कृष्ण छठ में प्रभो, आये गर्भ मंझार ।
मात सुसीमा का जनम, किया सफल करतार।। श्री पद्म०
ॐ ह्रीं माघ कृष्णा षष्ठ्यॉ गर्भ मंगलप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जि० अर्घ्य नि० ।१।

कार्तिक वदी तेरह तिथी, प्रभू लियो अवतार ।
देवों ने पूजा करी, हुआ मंगलाचार ।। श्री पद्म ०
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लात्रयोदश्यॉं जन्ममगंलप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जि० अर्घ्य नि०।२।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी, तृणवत् बन्धन तोड़।
तप धार्यो भगवान ने, मोह कर्म को मोड़।।श्री पद्म०
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यॉं तपोमंगलप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजि० अर्घ्यनि० ।३।

चैत्र शुक्ल की पूर्णिमा उपज्यो केवलज्ञान।

भवसागर से पार हो, दियो भव्य जन ज्ञान।।श्री पद्म०
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापूर्णिमा केवलज्ञानप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजि० अर्घ्यं नि० ।४।
फागुन वदी चतुर्थी को, मोक्ष गये भगवान ।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजौं धर ध्यान ।। श्री पद्म०
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजि० अर्घ्यं नि० ।५।

जयमाला

दोहा-चौतीसों अतिशय सहित, बाड़ा के भगवान ।
जयमाला श्री पद्म की, गाऊँ सुखद महान ।१।

पद्धरि छन्द

जय पद्मनाथ परमात्मदेव, सुर जिनकी करते चरन सेव ।
जय पद्म पद्म प्रभु तन रसाल, जय-जय करते मुनि मन विशाल ।२।
कौशाम्बी में तुम जन्म लीन,बाड़ा में बहु अतिशय करीन।
इक जाट पुत्र ने जमीं खोद,पाया तुमको होकर समोद।३।
सुनकर हर्षित हो भविक वृन्द, पूजा आकर की दुःख निकन्द ।
करते दुखियों का दुःख दूर, हो नष्ट प्रेत बाधा जरूर ।४।

डाकिन शाकिन सब होय चूर्ण, अन्धे हो जाते नेत्र पूर्ण ।
श्रीपाल सेठ अंजन सुचोर, तारे तुमने उनको विभोर ।५।
अरू नकुल सर्प सीता समेत, तारे तुमने निज भक्त हेत।
हे संकट मोचन भक्तपाल,हमको भी तारो गुण विशाल।६।
विनती करता हूं बार-बार, होवे मेरा दुख क्षार-क्षार ।
सब मीना गूजर जाट जैन, आकर पूजैं कर तृप्त तैन।७।
मन वच तन से पूजें जो कोय, पावें वे नर शिव सुख जु सोय।
ऐसी महिमा तेरी दयाल, अब हम पर भी हो ओ कृपाल ।८।

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मेढ़ी में श्री पद्म की पूजा रची विशाल ।
हुआ रोग तब नष्ट सब, बिनवे छोटेलाल ।।
पूजा विधि जानूं नहीं, नहिं जानूं आह्वान ।
भूल चूक सब माफ कर, दया करो भगवान ।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

***

शान्तिनाथ जिन पूजा

(श्री बख्तावर सिंह कृत)

सर्वारथ सुविमान त्याग गजपुर 'हस्तिनापुर' में आये ।
विश्वसेन भूपाल तासु के नन्द कहाये ।।
पंचम चकी भये मदन द्वादशवें राजे ।
मैं सेवूं तुम चरण तिष्ठये ज्यों दुःख भाजे ।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अथ अष्टक

पंचम उदधि तनो जल निरमल कंचन कलश भरे हरषाय ।
धार देत ही श्रीजिन सन्मुख जन्म जरामृत दूर भगाय ।।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय ।
तिन के चरण कमल के पूजे रोग शोक दुख दारिद जाय।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं नि० ।१।

मलयागिरि चंदन कदली नंदन कुकुंम जल के संग घिसाय।
भव आताप विनाशन कारण चरचूं चरण सबै सुखदाय। शांति०
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय-संसारताप विनाशनायचंदन नि० ।२।
पुण्य राशि राम उज्जवल अक्षत शशि-मरिचि तसु देख लजाए ।
पुंज किए तुम चरणन आगे अक्षय पद के हेतु बनाय । शांति०
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षता नि०स्वाहा ।३।
सुर पुनीत अथवा अवनी के, कुसुम मनोहर लिए मगाँय ।
भेंट धरी तुम चरणन के ढ़िग, ततक्षिण कामबाण नस जाय । शांति०
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय काम-बाण-विध्वंसनायपुष्पंनि० ।४।
भांति-भांति के सद्य मनोहर कीने मैं पकवान संवार ।
भर थाली तुम सन्मुख लायो क्षुधा वेदनी वेग निवार ।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय ।
तिन के चरण कमल के पूजे रोग शोक दुख दारिद जाय।।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० ।५।
घृत सनेह करपूर लाय कर दीपक ताके धरे प्रजार ।
जग मग जोत होत मंदिर में मोह अंध को देत सुटार ।। शांति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपंनि० ।६।

देवदारू कृष्णागरू चन्दन तगर कपूर सुगन्ध अपार ।
खेऊँ अष्ट करम जारन को, धूप धंनजय माहि सुडार। शांति०

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्व० ।७।

नारंगी बादाम सुकेला एला दाड़िम फल सहकार ।
कंचन थाल माहि धर लायो, अरचत ही पाऊँ शिव नार।। शांति०

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्व० ।८।

जल फलादि वसु द्रव्य संवारे अर्घ चढ़ाये मंगल गाय ।
'बखत रतन' के तुम ही साहिब दीजे शिवपुर राजकराय। शांति०

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यनिर्व० ।९।

पंचकल्याणक अर्घ्यावलि

'छन्द उपगति'

भादव सप्तमि श्यामा, सर्वारथ त्याग गजपुर आये ।
माता ऐरा नामा, मैं पूजूं ध्याऊँ अर्घ शुभलाये ।।
ॐ ह्रीं श्री भाद्रपद कृष्णा सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।१।

जन्मे तीरथ नाथं, वर जेठ असित चतुर्दशी सोहै ।
हरिगण नावें माथं, मैं पूजूं शांतिचरण युग जोहै ।
ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ-कृष्णा-चतुर्दश्यां जन्म-कल्याणक प्राप्ताय श्री शान्तिनाथ - जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।२।

चौदस जेठ अंधयारी, कानन में जाय योग प्रभु लीन्हा।
नवनिधिरत्न सुछांरी, मैं वन्दूं आत्मसार जिन चीन्हा।।
ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ-कृष्णा-चतुर्दश्यां तन-कल्याणक प्राप्तायश्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा ।३।

पौष दसें उजियारा, अरि घाति ज्ञान भानु जिन पाया।
प्रातिहार्य वसु धारा, मैं सेऊँ सुर नर जासु यश गाया।।

ॐ ह्रीं पौष-शुक्ला-दशम्यां ज्ञान-कल्याणक प्राप्ताय श्री शान्तिनाथ - जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।४।

सम्मेद-शैल भारी, हन कर अघाति मोक्ष जिन पाई ।
जेठ चतुर्दिश-कारी, मैं पूजूं सिद्धथान सुखदायी ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ-कृष्णा-चतुर्दश्यां मोक्ष-कल्याणक प्राप्ताय शान्तिनाथ - जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।५।

जयमाला - छप्पय-छन्द

भये आप जिनदेव जगत में सुख विस्तारे ।
तारे भव्य अनेक तिन्हों के संकट टारे ।।
टारे आठों कर्म मोक्ष सुख तिनको भारी ।
भारी विरद निहार लही मैं शरण तिहारी ।।
तिहारे चरणन को नमूं दुःख दारिद संताप हर ।
हर सकल कर्म छिन एक में, शांति जिनेश्वर शांति कर।१।
दोहा-सारंग लक्षण चरण में, उन्नत धनु चालीस ।
हाटक वर्ण शरीर द्युति, नमूं शांति जग ईश ।२।

छन्द भुजंग-प्रयात

प्रभो आपने सर्व के फन्द तोड़े, गिनाऊँ कछ मैं तिनों नाम थोड़े।
पड़े अंबु के बीच श्रीपाल राई, जपो नाम तेरो भए थे सहाई ।३।
धरों राय ने सेठको सूलिका पै, जपी आपके नाम की सार जापै।
भये थे सहाई तबै देव आये, करी फूल वर्षा सिंहासन बनाये।४।
जबै लाख के धाम वह्नि प्रजारी, भयो पाण्डवों पै महा कष्ट भारी।
जबै नाम तेरे तनी टेर कीनी, करी थी विदुर ने वहीं राह दीनी।५।
हरी द्रौपदी धातकी खंड मांही, तुम्ही वहाँ सहाई भला और नाही।
लियो नाम तेरो भलो शील पालो, बचाई तहाँ तै सबै दुःख टालो।६।
जबै जानकी राम न जो निकारी, धरे गर्भको भार उद्यान डारी।
रटोनाम तेरो सबै सौख्य दाई, करी दूर पीड़ा सुक्षण ना लगाई ।७।
व्यसन सात सेवें करे तस्कराई, सुअंजनसे तारेघड़ी न लगाई ।
सहे अंजना चंदना दुख जेते गये भाग सारे जरा नाम लेते ।८।
घड़े बीच में सासु ने नाग डारो, भलो नाम तेरोजुसोमा संभारो ।
गई काढ़ने को भई फूल माला, भई है विख्यात सबै दुःख टाला ।९।
इन्हें आदि देके कहाँ लों बखानें, सुनो विरद भारी तिहूं लोक जानें।

अजी नाथ मेरी जरा ओर हेरो, बड़ी नाव तेरी रती बोझ मेरो ।१०।
गहो हाथ स्वामी करो वेग पारा, कहूं क्या अबै आपनी मै पुकारा ।
सबै ज्ञान के बीच भासी तुम्हारे, करो देर नाहीं मेरे शांति प्यारे ।११।

घत्ता–श्री शांति तुम्हारी, कीरत भारी, सुर नरनारी गुणमाला ।
'बख्तावर'ध्यावे, 'रतन' सु गावे, मम दुख दारिद सबटाला ।।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।
अजी एरा नन्दन छवि लखत ही आप अरणं ।
धरै लज्जा भारी करत थुति सो लाग चरणं ।।
करै सेवा सोई लहत सुख सो सार क्षण में ।
घने दीना तारे हम चहत हैं वास तिन में ।।
इत्यीशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

***

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

गीता छन्द

वर स्वर्ग प्राणत को विहाय, सुमात वामा सुत भये ।
अश्वसेन के पारस जिनेश्वर, चरन जिनके सुर नये ।।
नव हाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसैं ।
थापूं तुम्हें जिन आय तिष्ठो करम मेरे सब नसैं ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट्।

छदं नाराच

क्षीरसोम के समान अम्बुसार लाइये ।
हेमपात्र धारिकैं सु आपको चढ़ाइये ।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा ।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नही कदा ।।

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।१।

चंदनादि केशरादि स्वच्छ गंध लीजिये ।
आप चरण चर्च मोहताप को हनीजिये ।। पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चंदनं निर्व० स्वा० ।२।

फेन, चद्रं के समान अक्षतान् लाइके ।
चर्न के समीप सार पुजं को रचाइके ।।पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा ।३।

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाइके ।
धार चर्न के समीप काम को नशाइके ।।पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा ।४।

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सने ।
आप चर्न चर्चतें क्षुधादि रोग को हने ।।पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं

निर्व० स्वाहा ।५।

लाय रत्न दीप को सनेह पूर के भरूं ।
वातिका कपूर बारि मोह ध्वांत को हरूं।। पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा ।६।

धूप गंध लेय के सुअग्निसंग जारिये ।
तास धूप के सुसंग अष्टकर्म बारिये ।।पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व० स्वाहा ।७।

खारिकादि चिरभटादि रत्न थाल मे भरूं ।
हर्ष धारिकैं जजूँ सुमोक्ष सौख्यको वरूं ।। पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा ।८।

नीरगंध अक्षतान पुष्प चारू लीजिये ।
दीप धूप श्रीफलादिं अर्घ तैं जजीजिये ।।पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यंनिर्व० स्वाहा ।९।

पंचकल्याणक अर्घ्यावलि

शुभप्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये ।
वैशाख तनी दुतिकारी, हम पूजें विघ्न निवारी ।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगल प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।१।

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष विख्याता ।
श्यामा तन अद्भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै ।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री पार्श्व० जि० अर्घ्यं नि० ।२।

कलि पौष एकादशि आई, तब बारह भावन भाई ।
अपने कर लौचं सु कीना, हम पूजैं चरन जजीना ।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां तपोमगंल प्राप्ताय श्री पार्श्व० जि० अर्घ्यं नि० ।३।

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवल ज्ञान उपाई ।
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवन को सुख दीना ।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञान प्राप्ताय श्री पार्श्व०जि० अर्घ्यं० नि० ।४।

सित सातैं सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई ।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना ।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला सप्तायं मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री पार्श्व०

जि० अर्घ्य नि०।५।

जयमाला

पारस नाथ जिनेन्द्रतने वच, पौन भखी जरते सुन पाये ।
कर्यो सरधान लह्रो पद आन भये पद्मावति शेष कहाये ।।
नाम प्रताप टरैं संताप, सुभव्यन को शिवशर्म दिखाये ।
हे अश्वसेन के नदं भले, गुण गावत है तुमरे हर्षाये ।।
दोहा-केकी-कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ ।
लक्षण उरग निहार पग, वंदो पारसनाथ ।१।

पद्धरि छंद

रची नगरी छह मास अगार। बने चहुं गोपुर शोभ अपार।
सु कोट तनी रचना छबि देत। कगूंरन पैं लहकै बहुकेत।२।
बनारस की रचना जु अपार।करी बहु भांति धनेश तैयार।
तहाँ अश्वसेन नरेन्द्र उदार।करैं सुख वाम सु दे पटनार ।३।
तज्यो तुम प्रानत नाम विमान। भये तिनके वर नंदन आन ।
तबै सुर इद्रं नियोगनि आय। गिरिंद करी विधि न्हौन सुजाय।४।

पिता-घर सौंपि गये निजधाम। कुबेर करैं वसु जाम सुकाम।
बढ़े जिन दोज-मंयक समान। रमैं बहु बालक निर्जर आन।५।
भए जब अष्टम वर्ष कुमार। धरे अणुव्रत्त माह सुखकार।
पिता जब आन करी अरदास। करो तुम ब्याह वरो ममआस।६।
करी तब नाहिं रह जग चंद।किये तुम काम कषाय जुमंद।
चढ़े गजराज कुमारन संग। सुदेखत गंगतनी सुतरंग ।७।
लख्यो इक रंक करै तप घोर। चहूँदिशि अगनि बलै अति जोर।
कहै जिननाथ अरे सुन भ्रात। करै बहु जीवन की मत घात।८।
भयो तब कोप कहै कित जीव । जले तब नाग दिखाय सजीव ।
लख्यो यह कारण भावन भाय। नये दिव ब्रह्मरिषीसुर आय ।९।
तबहिं सुर चार प्रकार नियोग। धरी शिविका निज कंध मनोग ।
कियो वन माहिं निवास जिनंद। धरे व्रत चारित आनन्दकंद।१०।
गहे तहँ अष्टम के उपवास। गये धनदत्त तने जु अवास।
दियो पयदान महासुखकार। भई पन वृष्टि तहाँ तिहिं बार।११।
गये तब कानन माहिं दयाल। धर्‌यो तुम योग सबहिं अघ टाल ।
तबै वह धूम सुकेतु अयान। भयो कमठाचर को सुर आन ।१२।
करै नभ गौन लखे तुम धीर। जु पूरब बैर विचार गहीर।
किया उपसर्ग भयानक घोर। चली बहु तीक्षण पवन झकोर ।१३।

रह्यो दशहूँ दिश में तम छाय। लगी बहु अग्नि लख नहिं जाय ।
सुरूण्डन के बिन मुण्ड दिखाय। पड़े जल मूसलधार अथाय १४।
तबै पद्मावति-कंत धनिंद। नये जुग आय जहाँ जिनचंद।
भग्यो तब रंक सुदेखत हाल । लह्यो तब केवलज्ञान विशाल ।१५।
दियो उपदेश महा हितकार । सुभव्यन बोध समेद पधार।
सुवर्णभद्र जहाँ कूट प्रसिद्ध । वरी शिवनारि लही वसुरिद्ध।१६।
जजूँ तुम चरन दोउ कर जोर । प्रभु लखिये अबही मम ओर।
कहै 'बखतावर' रत्न बनाय । जिनेश हमें भव पार लगाय ।१७।
घत्ता- जय पारस देवं, सुरकृत सेवं, वंदत चर्न सुनागपती।
करूणा के धारी पर उपकारी।शिवसुखकारी कर्महती।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
अडिल्ल -जो पूजै मन लाय भव्य पारस प्रभु नितही ।
ताके दुख सब जाय भीति व्यापै नहि कित ही।।
सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे ।
अनुक्रमसों शिव लहै, 'रत्न' इमि कहै पुकारे ।।
इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

* * *

श्री महावीर स्वामी जिन पूजा

मत्तगयन्द छन्द

श्रीमत वीर हरें भवपीर, भरें सुखसीर अनाकुलताई ।
केहरि अंक अरीकरदंक, नये हरि पंकति मौलि सुआई।।
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई।
हे करूणा-धन-धारक देव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

(चाल-द्यानतरायकृत नंदीश्वराष्टक आदि अनेक रागों में बनती है।)

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचन भृंग भरों ।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातें धार करों ।।
श्री वीर महा-अतिवीर, सन्मति नायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं

नि० स्वाहा ।१।

मलयागिरि चन्दनसार, केसर संग घसों ।
प्रभु भवआताप निवार, पूजत हिय हुलसों ।। श्री वीर०
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ,
नि० स्वाहा ।२।

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनो थार भरी ।
तसु पुंज धरों अविरूद्ध, पावों शिवनगरी ।। श्री वीर०
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् ,
नि० स्वाहा ।३।

सुरतरू के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे ।
सो मनमथ भंजन हेत, पूजों पद थारे ।। श्री वीर०
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्प ,
नि० स्वाहा ।४।

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी ।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी।। श्री वीर०
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ,
नि० स्वाहा ।५।

तमखंडित मंडित नेह, दीपक जोवत हों ।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों ।। श्री वीर०
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं , नि० स्वाहा ।६।

हरिचंदन अगर कपूर, चूर सुगंध करा ।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा ।। श्री वीर०
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं , नि० स्वाहा ।७।

रितु फल कल-वर्जित लाय, कंचन थार भरों ।
शिव फलहित हे जिनराय, तुम ढिग भेंट धरों।।श्री वीर०
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं , नि० स्वाहा ।८।

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों ।
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों ।। श्री वीर०
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं , निर्व० स्वाहा ।९।

पंचकल्याणक अर्घ्यावलि 'राग टप्पा'

मोहि राखो हो शरणा, श्री वर्द्धमान जिनरायजी मोहि राखो०।।
गरभ साढ़सित छट्ट लियो थित, त्रिशला उर अघ हरना।
सुर सुरपति तित सेव करौ नित, मैं पूजूं भवतरना।।
मोहि राखो हो शरणा, श्री वर्द्धमान जिनरायजी।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला षष्ठ्यां गर्भ मगंल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।१।

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कन वरना ।
सुरगिरि सुरगुरू पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना । मोहि०

ॐ ह्रीं श्री चैत्रशुक्ला त्रयोदश्यां जन्ममंगल मंडिताय श्री महा० अर्घ्य नि० ।२।

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना ।
नृप कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना ।। मोहि०

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णा दशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री महा० अर्घ्य नि० ।३।

शुक्ल दशैं वैशाख दिवस अरि, घात चतुक क्षय करना।
केवल लहि भवि भवसर तारे, जजों चरन सुख भरना।।मोहि०

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला-दशम्यां केवलज्ञान मंडिताय श्री महा अर्घ्य नि०।४।

कार्तिक श्याम अमावस शिव तिय, पावापुर तैं वरना।
गणफनिवृन्द जजें तित बहुविध, मैं पूजों भयहरना। मोहि०

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा अमावस्यायां मोक्षमंगल मंडिताय श्रीमहा अर्घ्य नि० ।५।

जयमाला

(छन्द-हरिगीतिका-२८ मात्रा)

गणधर अशनिधर, चक्रधर हलधर, गदाधर वरवदा ।
अरू चापधर, विद्यासुधर तिरशूलधर सेवहिं सदा ।।
दुखहरन आनंदभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं ।
सुकुमाल गुण मनिमाल उन्नत भालकी जयमाल हैं ।।

छन्द घत्ता

जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन चंदवरं ।
भवतापनिकंदन, तनकनमंदन, रहित सपंदन नयन धरं।।

छन्द त्रोटक

जय केवलभानु-कला सदनं। भवि-कोक-विकाशन कंदवनं।
जगजीत महारिपु मोहहरं। रजज्ञान-दृगावर चूर करं।१।
गर्भादिक मंगल मंडित हो। दुखदारिद को नित खंडित हो।
जग माहिंतुम्ही सतपंडित हो। तुम ही भवभाव-विहंडित हो।२।
हरिवंश सरोजन को रवि हो। बलंवत महंत तुम्ही कवि हो।
लहि केवलधर्म प्रकाश कियो। अबलों सोई मारगराजतियो।३।
पुनि आप तने गुण माहिं सही। सुरमग्न रहैं जितने सबही।
तिनकी वनिता गुनगावत हैं। लय-ताननिसों मनभावत हैं।४।
पुनि नाचत रंग उमंग-भरी।तुअ भक्ति विषै पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं। सुर लेत तहां तननं तननं।५।
घननं घननं घनघंट बजै। दृमदं दृमदं मिरदंग सजै ।
गगनांगन-गर्भगता सुगता। ततता ततता अतता वितता।६।
धृगतां धृगतां गति बाजत है। सुरताल रसालजु छाजत है ।
सननं सननं सननं नभमें। इकरूप अनेक जु धारि भ्रमें ।७।
कई नारि सु बीन बजावत है। तुमरो जस उज्जवल गावत है।
करताल विषै करताल धरैं। सुरताल विशाल जु नाद करैं।८।

इन आदि अनेक उछाह भरी। सुरभक्ति करें प्रभुजी तुमरी।
तुमही जग जीवन के पितु हो। तुमही बिनकारनतें हितु हो।९।
तुमही सब विघ्न विनाशन हो। तुमही निज आनंदभासन हो।
तुमही चित चिंतितदायक हो।जगमाहिं तुम्ही सबलायकहो।१०।
तुमरे पन मगंल माहिं सही। जिय उत्तम पुन्य लियो सबही ।
हमतो तुमरी शरणागत हैं। तुमरे गुन में मन पागत है ।११।
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये।जबलों वसु कर्म नहीं नसिये।
तबलों तुम ध्यान हिये वरतो। तबलों श्रुतचिंतन चित्त रतो।१२।
तबलों व्रत चारित चाहतु हों। तबलों शुभभाव सुगाहतु हो ।
तबलों सतसंगति नित्त रहो। तबलों मम संजम चित्त गहो ।१३।
जबलों नहिं नाश करों अरिको, शिव नारि वरों समता धरिको।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी। हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ।१४।

घत्ता- श्रीवीर जिनेशा नमित सुरेशा, नाग नरेशा भगति भरा ।
'वृन्दावन' ध्यावै विघन नशावै, वांछित पावै शर्म वरा ।।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय पुर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- श्री सन्मति के जुगल पद, जो पूजैं धरि प्रीत ।
वृन्दावन सो चतुर नर, लहैं मुक्ति नवनीत ।।
इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

***

श्री बाहुबली स्वामी जिन पूजा

दोहा :- कर्म अरिगण जीति के, दरशायों शिव पंथ।
सिद्ध-पदवी जिन लह्यो भोग भूमिके अंत।।
समर दृष्टि जल जीत लहि, मल्लयुद्ध जय पाय।
वीर अगणी बाहुबली, वंदों मन वच काय।।
ॐ ह्रीं श्रीमत् गोमट्टेश्वर अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीमत् गोमट्टेश्वर अत्र तिष्ट ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीमत् गोमट्टेश्वर अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक (चालः जोगीरासा)

जन्म जरा मरणादि तृणा कर, जगत जीव दुख पावे।

तिहि दुःख दूर करन जिनपद पूजन जल ले आवे।।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबली बलधारी।
तिनके चरण कमल को नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी।।
ॐ ह्रीं वर्तमानावसर्पिणी समये मुक्ति स्थान प्राप्तय कर्मारि विजयी वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबलीपरम योगीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाषनाय जल निर्वपामीति स्स्वाहा ।।१।।
यह संसार मरुस्थल अटवी तृष्णा दाह भरी है।
तिहि दुखवारन चंदन लेके जिन पद पूज करी है।।परम०
ॐ ह्रीं वर्तमानावसर्पिणी ...... भवताप विनाशनाय चंदन नि० स्वाहा।२।
स्वच्छ शालि शुचि नीरज रजसम गंध अखंड प्रचारी।
अक्षय पदके पावन कारन पूजें भवि जगतारी।।परम०
ॐ ह्रीं वर्तमानावसर्पिणी ...... अक्षतपदप्राप्तये अक्षतान् नि०स्वाहा।।३।
हरिहर चक्रपति सुर दानव मानव पशु बस जढ़ा के।
तिहि मकरध्वज नाशक जिन को पूजों पुष्प चढ़ा के ।।परम०
ॐ ह्रीं वर्तमानावसर्पिणी ...... कामबाण विध्वंसनाम पुष्पं

नि० स्वाहा।।४।

दुखद त्रिजग जीवन को अति ही दोष क्षुधा अनिवारी।
तिहि दुख दूर करन को चरू वर ले जिन पूज प्रचारी।।परम०

ॐ ह्रीं वर्तमानावसर्पिणी ...... क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।५।

मोह महातम में जग जीवन शिव मग नाहिं लखावे।
तिहि निरवारन दीपक कर ले जिनपद पूजन आवे।। परम०

ॐ ह्रीं वर्तमानावसर्पिणी ...... मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।६।।

उत्तम धूप सुगंध बनाकर दश दिशमें महकावें।
दश विधि बंध निवारण कारण जिनवर पूज रचावें।।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबली बलधारी।।
तिनके चरण कमल को नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी।।

ॐ ह्रीं वर्तमानावसर्पिणी..... अष्टकर्म दहनाय धूपं० नि० स्वाहा।।७।।

सरस सुवर्ण सुगंध अपूपम स्वच्छ महाशुचि लावें।
शिव फल कारण जिनवर पद की फलसों पूज रचावें।। परम०

ॐ ह्रीं वर्तमानवसर्पिणी..... मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।८।

वसु विधिके वश वसुधा सब ही परवश अति दुख पावें।
तिहि दुख दूर करन को भविजन अर्घ्य जिनाग्र चढ़ावे।।परम०

ॐ ह्रीं वर्तमानवसर्पिणी..... अनर्ध्यपद प्राप्तये अध्यं नि०।६।

जयमाला

दोहाः- आठ कर्म हनि आठ गुण प्रगट करे जिन रूप।
सो जयवंती बाहुबली परम भये शिव भूप।।

कुसुमलता छंद

जय जय जय जगतार शिरोमणि क्षत्रिय वंश अशंस महान,
जय जय जय जगजन हितकारी दीनो जिन उपदेश प्रमाण।।
जय जय चक्रपति सुत जिनके सतसुत जेष्ठ भरत पहिचान,
जय जय जय श्री ऋषभदेव जिन सो जयवंत सदा जग जान।१।
जिनके द्वितीय महादेवी शुचि नाम सुनंदा गुण की खान,
रूप शील सम्पन्न मनोहर तिनके सुत बाहुबली महान।
सवा पंच शत धनु उन्नत तन हरितवरण शोभा असमान,

वैडूर्यमणि पर्वत मानों नील कुलाचल सम थिर जान।२।
तेजवंत परमाणु जगत में तिन करि रच्यो शरीर प्रमाण,
सत वीरत्व गुणाकार जाको निरखत हरि हरषे उर आन।
धीरज अतुल वज्र सम नीरज वीराग्रणी सम अति बलवान,
जिन छवि लखि मनुशशि छवि लाजे कुसुमायुध लीनों सुपुमान।३।
बालसमय जिन बाल चन्द्रमा शशि से अधिक धरे अपार।
ऋषभदेव ने पोदनपुरके नृप कीने बाहुबली कुमार,
दई अयोध्या भरतेश्वरको आप बने प्रभुजी अनगार ।४।
राजकाज षटखंड महीपति सब दल लै चढ़ि आये आप,
बाहुबली भी सन्मुख आये मंत्रिन तीन युद्ध दिये थाप।
दृष्टि नीर अरु मल्ल युद्ध में दोनों नृप कीजो बलथाप,
वृथा हानि रुकजाय सैन्यकी याते लड़िये आपों आप।५।
भरत बाहुबली भूपति भाई उतरे समर भूमि में जाय,
दृष्टि नीर रण थके चक्रपति मल्लयुद्ध तब करो अघाय।
पगलत चलत चलत अचलाधर तब कंपत अचल शिखर
ठहराय, निषध नील अचलाण्धर मानो भये चलाचल क्रोध बसाय।६।
भुज विक्रमबली बाहुबली ने लिये चक्रपति अधर उठाय,

चक्र चलायो चक्रपति तब सो भी विफल भयो तिहि ठाय।
अति प्रचंड भुजदंड सूंड-सम नृप शार्दूल बाहुबलि राय।
सिंहासन मंगवाय जास पे अग्रज को दीनों पधराय।७।
राजरमा, दामासुर धन मय जीवन दमक दामिनी जान,
भोग भुजंग जंग सम जगको जान त्याग कीनों तिहि थान।
अष्टापद पर जाय वीर नृप वीर व्रती धर लीनों ध्यान,
अचल अंग निरभंग संग तज संवत्सर लों एक ही थान।८।
विषधर बंबी करी चरननतल ऊपर बेल चढ़ी अनिवार,
युगजंघा, कटि, बाहु बेढ़ि कर पहुँची वक्षस्थल परसार।
सिर के केश बढ़े जिस मांही नभचर पक्षी बसे अपार,
धन्य धन्य इस अचल ध्यान महिमा सुर गावें उर धार।६।
कर्म नासि शिव जाय बसे प्रभु ऋषभेश्वर से पहले जान,
अष्ट गुणांकित सिद्ध शिरोमणि जगदीश्वर पद लह्यो पुमान।
वीरव्रती वीराग्रगण्य प्रभु बाहुबली जगधन्य महान,
वीरवृत्ति के काज जिनेश्वर नमैं सदा जिन बिंब प्रमान।१०।
दोहा:- श्रवनबेलगुल इन्द्र गिरि जिनवर बिंब प्रधान।
छप्पन फुट उतंगतनो खड़गासन अमलान।।

अतिशयवंत अनंत बल धारक बिंब अनूप।
अर्ध्य चढ़ाय नमों सदा जय जयजिनवर भूप।।
ॐ ह्रीं वर्तमानवसर्पिणी समये मुक्तिस्थान प्राप्ताय कर्मारि विजयी वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली स्वामिने अनर्घ्यपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपामि।

समुच्चय चौबीसी जिन पूजा

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनराय ।
चन्द पुष्प शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजित सुरराय ।।
विमल अनंत धरम जस उज्जवल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ।।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-जिनसमूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्रतिष्ठ -तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं वृषभादि- जिन समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव

भव वषट्।

अष्टक

मुनिमन सम उज्जवल नीर, प्रासुक गन्ध भरा ।
भरि कनक कटोरी धीर, दीनी धार धरा ।।
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही ।
पद-जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही ।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्य:जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनायजलंनि०।१।
गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी ।
जिन चरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी ।।चौ०
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरांतेभ्य: भव-ताप-विनाशनाय चन्दनं० निर्व० ।२।
तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे ।
मुकताफल की उनमान, पुंज धरौं प्यारे ।। चौ०
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्य: अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० ।३।
वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे ।
जिन अग्र धरौं गुणमंड, काम-कलंक हरे ।। चौ०
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरातेभ्य: कामबाणविध्वसंनाय पुष्पं निर्व ।४।

मन मोदन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रसपूरित्त प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ।।
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही ।
पद-जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही ।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ।५।
तमखाडनं दीप जगाय, धारों तुम आगे ।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागे ।। चौ०
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व० ।६।
दशगंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूम करम जरि जांहि, तुम पद सेवत हों।।चौ०
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा ।७।
शुचि-पक्व-सरस-फल सार, सब ऋतु के ल्यायो ।
देखत दृग मनको प्यार, पूजत सुख पायो ।। चौ०
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यः मोक्षफल-प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।८।
जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों ।

तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ।। चौ०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यः अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा ।६।

जयमाला

दोहा- श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाय हितहेत ।
गाऊं गुणमाला अबैं, अजर अमर पद देत ।।

छन्द घत्ता

जय भवतम भंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छकरा ।
शिवमग परकाशक, अरिगण नाशक चौबीसों जिनराजवरा ।१।

छन्द पद्धरि

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत । जयअजित जीतवसुअरि तुरंत ।
जय संभव भवभय करत चूर। जय अभिनंदन आनंदपूर ।।२।।
जय सुमति सुमतिदायक दयाल। जयपद्म पद्मदुति तनरसाल ।
जयजय सुपार्स भवपास नाश। जय चद्रं चद्रंतदुति प्रकाश ।३।
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत। जय शीतल शीतल गुननिकेत ।
जय श्रेयनाथ नुतसहसभुज्ज। जय वासवपूजित वासुपुज्ज ।४।
जय विमल विमलपद देनहार। जय जय अनंत गुनगन अपार ।

जय धर्म धर्म शिव शर्म देत। जय शांति शांति पुष्टीकरेत ।५।
जय कुंथु कुथवादिक रखेय। जयअर जिनवसुअरि क्षयकरेय ।
जय मल्लि मल्ल हतमोहमल्ल।जय मुनिसुव्रत व्रतशल्लदल्ल ।६।
जय नमि नित वासवनुत सपेम। जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम ।
जय पारसनाथ अनाथ नाथ। जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ।७।

छन्द घत्ता

चौबीस जिनंदा आनंदकंदा, पापनिकंदा सुखकारी ।
तिनपद जुगचंदा उदय अमंदा, वासव-वंदा हितधारी ।८।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-चतुर्विंशतिजिनेभ्यः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
सोरठा-भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसौं जिनराजवर ।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ।१०।
इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

* * *

शान्ति पाठ (जुगल किशोर)

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपती चक्री करें।
हम सारिखे लघु पुरुष कैसे यथाविधि पूजा करें ।।
धन क्रिया ज्ञान रहित न जानें रीति पूजन नाथ जी।
हम भक्तिवश तुम चरण आगे जोड़लीने हाथ जी ।।१।।
दुखहरण मंगल करण आशा भरन जिन पूजा सही।
यों चित में सरधान मेरे शक्ति है स्वयमेव ही।।
तुम सारिखे दातार पाए काज लघु जाचूं कहा।
मुझे आप सम कर लेहु स्वामी यहीं इक वांछा महा।।२।।
संसार भीषण विपिन में वसुकर्म मिल आतापियों।
तिस दाह तें आकुलित चित है शांति थल कहुं ना लियो।।
तुम मिले शांतिस्वरूप शांति करणसमरभजगपती।
वसुकर्म मेर शांत कर दो शांतिमय पंचम गति ।।३।।
जबलौ नहीं शिव लहूं तबलौं देहु यह धन पावना।
सतसंग शुद्धाचरण श्रुत-अभ्यास आतम भावना।।
तुम बिन अनंतानंत काल गयो रुलत जगजाल में।

अब शरण आयो नाथ दुहु कर जोड़ नावत भाल में ।।४।।
दोहा:- कर-प्रमाण के मान तैं गगन नपै किहि भंत।
त्यौं तुम गुण वर्णन्न करत कबि पावै नहि अंत।।
यहाँ नौ बार णमोकार मंत्र का जपना चाहिए।

***

विसर्जन पाठ (जुगल किशोर)

सम्पूर्ण विधि कर वीनऊं इस परम पूजन ठाठ में।
अज्ञानवश शास्त्रोक्त विधि तें चूक कीनों पाठ में।।
सो होहु पूर्ण समस्त विधि-वत तुम चरण की शरण तैं।
वंदौ तुम्हें कर जोरि, करो उद्धार जामन मरण तैं ।।१।।
आह्वानं, स्थापनं तथा सन्निधिकरण विधान जी।
पूजन विसर्जन यथाविधि जानूं नहीं गुणखान जी।।
जो दोष लागौं सो नशो सब तुम चरण की शरण तैं।
वंदौ तुम्हें कर जोरि, करो उद्धार जामन मरण तैं ।।२।।
तुम रहित आवागमन आह्वान कियो जिन भाव में।

विधि यथाक्रम निजशक्ति सम पूजन कियो अतिचाव में।।
करहूं विर्सजन भाव ही में तुम चरण की शरण तें।
वंदौ तुम्हें कर जोरि, करो उद्धार जामन मरण तें ।।३।।
दोहा :- तीन भुवन तिहूं काल में, तुमसा देव न और।
सुख कारण संकट हरण, णमों 'जुगल' कर जोर।।

इत्याशीर्वादः ।पुष्पांजलि क्षिपामि ।

आशिका लेने का छन्द

दोहाः- श्री जिनवर की आशिका, लाजे शीश चढ़ाय।
भव भवके पातक कटें, दुःख दूर हो जाय।।

***

सुख दाता मंत्र

ॐ ह्रीं मानो गुप्ते नमः

***

सर्वग्रह शान्ति मंत्र

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रूं ह्रो ह्रः

असि आउसा सर्वशान्ति कुरू-कुरू स्वाहा
(सूर्योदय के समय पूर्व दिशा में मुख करके प्रतिदिन १०८ बार शुद्ध भाव से जपें।)

***

रविव्रत पार्श्वनाथ का मंत्र

ओं ह्रीं श्रीं अर्हं चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमः
ओं ह्रीं श्री कलि कुण्ड स्वामिने नमः

***

रोगनाशक मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलिकुण्डदण्डस्वामिने नमः।
आरोग्य-परमैश्वर्य कुरू कुरू स्वाहा।
यह मंत्र श्री पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा के सामने शुद्ध भाव और क्रिया पूर्वक १०८ बार जपना चाहिए

***

मंगलदायक मंत्र

ओं ह्रीं वरे सुवरे असिआउस नमः

एकान्त में प्रतिदिन १०८ बार धूप के साथ, शुद्ध भाव पूर्वक जपें ।

ऐश्वर्यदायक मंत्र

ओं ह्रीं असिआउसा नमः स्वाहा ।

सूर्योदय के समय पूर्व दिशा में मुख करके प्रतिदिन १०८ बार शुद्ध भाव से जपें ।

***

सर्वसिद्धिदायक मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ-तीर्थंकराय नमः।

समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक १०८ बार जपना चाहिए।

***

मनोरथ सिद्धि दायक मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः।

रोग निवारक मंत्र

ओं ह्रीं सकल-रोगहराय श्री सन्मति देवाय नमः।

शान्ति कारक मंत्र

ओं ह्रीं परमशान्ति विधायक श्री शान्तिनाथाय नमः
अथवा ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत परम सिद्धेभ्यो नमः।

***

नवग्रह शान्ति के लिए मंत्र जाप

१- सूर्य - ॐ णमो सिद्धाणं
२- चन्द्र - ॐ णमो अरिहंताणं
३- मंगल - ॐ णमो सिद्धाणं
४- बुध - ॐ णमो उवज्झायाणं
५- बृहस्पति - ॐ णमो आइरियाणं
६- शुक्र - ॐ णमो अरिहंताणं
७- शनि - ॐ णमो लोए सव्व साहूणं
८- केतु - ॐ णमो सिद्धाणं

६- केतु-राहु - ॐ णमो अरिहंताणं,
- ॐ णमो सिद्धाणं, - ॐ णमो आइरियाणं,
-ॐ णमो उवज्झायाणं, - ॐ णमो लोए सव्व साहूणं
हर मन्त्र का १० बार जाप होना चाहिए ।

***

महासुखप्राप्ति कारक मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं श्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं श्रीं णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं श्रीं णमो लोए सव्वसाहूणम् ॐ ह्रीं श्रीं णमो दंसण्मस्य, ॐ ह्रीं णमो चरित्तस्य, ॐ ह्रीं श्रीं णमो तवस्य।

***

ओम का जाप

'ओम्' नवकार मन्त्र के पाँच पद का वाचक है।
हृदय जप में बताये गये सफेद, लाल आदि पाँचों रंगों की पंखुडियों पर ओम् का क्रमशः ध्यान करना चाहिए। ॐ

अ-सि-आ-उ-सा के मन्त्र में भी :ओम्' रहा हुआ है। अतः नाभि कमल में अ, मस्तक कमल में सि, मुखकमल में आ, हृदय कमल में उ और कंठकमल में सा अक्षर का ध्यान करने से सब प्रकार से आनन्द रहता है।

***

दस लक्षण धर्म

वर्ष में जितने पर्व हैं, उनमें दस लक्षण पर्व राज हैं।

१. उत्तम क्षमा

क्षमा आत्मा का स्वाभाविक गुण है। उत्तम क्षमा तीन लोक का सार है। जब आत्मा में उत्तम क्षमा में कुछ कमी होती है तो यह जीव संसार में भटकता रहता है। जहाँ उत्तम क्षमा की अवस्था को यह आत्मा प्राप्त हुयी, वह परमात्मा बन जाता है। क्षमा कोई सुनने सुनाने की चीज नहीं है, इसका तो पालन करना चाहिये । एक समाज क्षमा को जितना धारण कर सकता है उतना ही वह बड़ा और महान है। कौन

किसका बन्धु है? कौन किसका बैरी है? सब कुछ एक दिन यहीं छोड़कर चले जाना है । इसलिये सब जीवों से मैत्री रखते हुए हमें अपनी आत्मा के अन्दर क्षमा धारण करनी चाहिये।

जाप - ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय नमः

२. उत्तम मार्दव

हृदय की कोमलता और नम्रता ही संसार में श्रेष्ठ है। नम्रता स्थिर रहने वाला गुण है, जिस पेड़ में फल लगते हैं और जितने अधिक फल लगते हैं उतना ही वह पेड़ झुकता है। इसी प्रकार मनुष्य में जितना ज्ञान बढ़ता जाता है, उतना ही उसमें मृदुता आ जाती है। दया धर्म का मूल मृदुता है। यही मृदुता या नम्रता आत्मा का सार है, और मोक्ष का मार्ग है । नम्र व्यक्ति का समस्त विश्व में आदर होता है। और वह अमर हो जाता है। जब नदी में बाढ़ आती है तो घमण्ड में चूर बड़े-बड़े वृक्षों को गिराती चली जाती है किन्तु नदी के किनारे की घास नम्रता से झुक जाती है और बाढ़ उतरने पर

सीधी खड़ी हो जाती है। लोक व्यवहार में थोड़ी सी कठोरता बरतनी भी पड़ सकती है पर हमें नम्रता को नहीं छोड़ना है। इसके साथ हमें स्वाभिमान से जीना भी सीखना होगा, और अभिमान को त्यागना होगा ।

जाप - ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय नमः ।

३. उत्तम आर्जव

३. आर्जवं का अर्थ है परिणामों की सरलता । जितना सरल हम अपने जीवन में बन जायेंगे उतना ही हम ईश्वरत्व के समीप हो जायेगें । कोई भी व्यक्ति परमात्मा का भक्त तब तक नहीं हो सकता जब तक उसमें मायाचार है । जो लोग पदार्थो में रूचि रखते हैं वे संसार में भटकते रहते हैं और जिन्होंने स्वयं अपने आप पर और परमात्मा पर विश्वास किया है, वे इस संसार से मुक्त हो जाते हैं । मायाचार कोई कथन करने की या सुनने की चीज नहीं है यह तो अनुभव करने की चीज है । संसार में वही जीव श्रेष्ठ है और मोक्ष मार्ग पर जा रहा है जो मायाचारी लोगों से दूर रहता है और

अंतरंग व वर्हिरंग दोनों रूपों में सरल परिणाम रखता है। जाप - ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय नमः

4. उत्तम शौच

शौच धर्म से तात्पर्य मन की पवित्रता से है । मन की पवित्रता तभी हो सकती है जब हम मन से लोभ को हटा दें । संसार में पर पदार्थों के कारण जो हमारी आसक्ति है वही लोभ का कारण है । इसे यदि हम हटा दें तो निश्चय ही हमें सुख की प्राप्ति होगी । उत्तम शौच अभिन्न है इससे मन शुद्ध होता है और यह लोभ का नाश करता है । जिन्होंने अपने को सुधारा वे अमर हो गये । इसलिए पहले अपने को सुधारों और स्वदृष्टि में अपना समय लगाओ । जाप - ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय नमः

५. उत्तम सत्य

सत्य पर सारे तप निर्भर करते हैं। बड़े-बड़े तपस्वी सत्य से विचलित हो गये, पर जिन्होंने सत्य का पालन किया, वे

संसार से मुक्त हो गये। दुनियाँ में सत्य ही श्रेष्ठ है और सदैव उसी की जय होती है। इस कलिकाल में रहते हुये भी हम जितना हो सके सत्य का पालन करें तो निश्चय ही हमें भी सुख की प्राप्ति होगी। सत्य कैसा होना चाहिये? सत्य वही उत्तम है जिससे शान्ति की स्थापना हो, सुख प्राप्त हो। यदि सत्य बोलने से कलह और अशान्ति को जन्म मिलता है तो ऐसे में मौन रहना ठीक है। हमें सत्यनिष्ठ बनना होगा। यदि हम सत्य का पालन करना चाहते हैं तो हमें अपने भीतर से क्रोध, मान, माया और लोभ को हटाना होगा। सत्य शाश्वत है और इसकी परिपूर्णता परमात्मा में है । सत्य से प्राप्त सुख स्थायी होता है।

जापः- ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय नमः।

६. उत्तम संयम

पाँच व्रत, पंचसमिति का पालन, चार कषायों का त्याग और मन-वचन काय का निग्रह ही संयम है। व्रत पाँच हैं- अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन पाँच

व्रतों और पंचसमिति को धारण व पालन करना ही संयम है। क्रोध, मान, माया, और लोभ इन चार कषायों का त्याग संयम हैं और मन,वचन और काय इन तीनों को काबू में रखना संयम है। इन्द्रिय निरोध संयम है । संयम धारण करने से आत्म कल्याण का मार्ग खुलता है। आत्मा के शुद्ध रूप के दर्शन करो, जितना हो सके संयम पालन करो ।

पर को अपना मान बैठा आपको जाना नहीं,
आपको जाने बिना परमात्म पद पाना नही,
परमात्म पद पा लिया तो संसार में आना नहीं ।

जाप - ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय नमः ।

७. उत्तम तप

इन्द्रियों का दमन करना और इच्छाओं का निरोध करना तप है। संसार में इच्छाओं का कोई अन्त नहीं है। तप इन इच्छाओं पर नियन्त्रण करने में सहायक है। अच्छी-अच्छी बातें करना, भगवान की स्तुति भजन आदि सुनना, अश्लील गीतों को न सुनना, शुद्ध और आवश्यक भोज्य पदार्थों को

ही ग्रहण करना एंव मादक पदार्थों का त्याग करना, किसी सुगन्धित पदार्थ की इच्छा न रखते हुए सुगन्ध और दुर्गन्ध दोनों में समता का भाव रखना और निराकुल भाव से थोड़ी बहुत देर मन, वचन व काय को निष्क्रिय करके आत्मचिंतन करना गृहस्थों के लिए सर्वोत्तम तप है ।

जैसे स्वर्ण को तपाने से उसका शुद्ध रूप निकल आता है, उसी प्रकार आत्मा तप द्वारा कर्म रूपी मैल का झेय करके शुद्ध अवस्था को प्राप्त कर लेता है। यह तप ही कल्याणकारी है और हर प्रकार के प्रमाद को नष्ट करने वाला है ।

जाप - ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय नमः

८. उत्तम त्याग

८. भारतीय संस्कृति में दान और त्याग को बहुत श्रेष्ठ कहा गया है। कुएँ से जल निकालते रहने से कुएँ में साफ जल रहता है और यदि जल निकालना बंद कर दिया जाये तो पानी सड़ने लग जाता है और उसमें से दुगर्न्ध आने लगती है। इसी प्रकार धन का सदुपयोग गरीबों, साधुओं, तपस्वी व

योग्य पात्रों को दान देने में है। जो व्यक्ति यथाशक्ति दान देता है, त्याग करता है, उसका जीवन सफल होता है। जब जीव अंतरंग और बहिरंग का और बहिरंग परिग्रह का त्याग कर आत्मध्यान में लीन हो जाता है तो वह उत्कृष्ट त्याग है। जाप - ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः

९. उत्तम अंकिचन्य

एक आत्मा के अतिरिक्त और कोई पदार्थ मेरा नहीं है। मैं एक परमात्मा स्वरूप वाला हूँ, ऐसा समझकर आत्मा में लीन होना है यही अंकिचन्य धर्म है। और मुक्ति का मार्ग है। मनुष्य जब अंकिचन्य धर्म को समझ लेता है तो वह सब कुछ त्याग देता है अमृतचन्द्र आचार्य कहते हैं- 'जहाँ शरीर ही मेरा नहीं तो यह मकान कपड़े आदि मेरे कैसे हो सकते हैं। आत्मा के अतिरिक्त, आत्मध्यान के अतिरिक्त मेरा कुछ भी नहीं। मैं तो अकेला आया था, जो शरीर है वह भी यहीं छोड़कर जाना है। फिर शरीर के प्रति इतनी आसक्ति क्यों? पुण्य सोने की बेड़ी और पाप लोहे की बेड़ी है। परमात्मा की

प्राप्ति इन दोनों के हटने से ही संभव है। इसलिए अपने परिणामों को उज्जवल रखों और किसी से राग द्वेष मत रखों।

जाप- ॐ ह्रीं उत्तम अंकिचन्य धर्मांगाय नमः

१०. उत्तम ब्रह्मचर्य

आत्मा में ही रमण करना उत्तम बह्मचर्य है। व्यवहारों में संयम से रहना ब्रह्मचर्य का पालन तो क्रोध, मान, माया और लोभ रूपी कषायों का त्याग करने से ही संभव है। बड़े-बड़े महासागर अनेक तूफानों के बाद भी विचलित नहीं होते। इसी प्रकार जिसने अपनी कषायों को हटा दिया है और शान्त रस पी लिया है उस पर पदार्थो का असर नही पड़ता । वस्तु भाव समझ में आने के बाद तथा स्व और पर का भेद समझने के बाद मनुष्य आत्म पदार्थ के अलावा दूसरे पदार्थो से निर्लेप रहता है। पर पदार्थो के प्रति मूर्च्छा न होना, इसी का नाम धर्म है, स्वभाव है। संसार में ब्रह्मचर्य का वर्णन अनेकों ने किया और सभी इसे महत्वपूर्ण मानते

है। आत्मा के दोषों का निवारण केवल आत्मचिंतन या ध्यान से हो सकता है।

जाप - ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मागाय नमः

***

पार्श्वनाथ स्त्रोत्र

नरेन्द्रं फणीद्रं सुरेन्द्रं अधीशं। शतेंद्रं सु पूजैं भजैं नाय शीशं।
मुनींद्रं गणेद्रं नमो जोडि हाथं। नमो देव-देवं सदा पार्श्वनाथं।।१।।
गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुड़ावै। महा आगतैं नागतैं तू बचावै।
महावीरतैं युद्ध मैं तू जितावैं। महारोगतै बंधतैं तू छुड़ावै।।२।।
दुखी दुःखहर्ता सुखी सुखकर्ता, सदा सेवकों को महानंद भर्ता।
हरेयक्ष राक्षस-भूतपिशाचं, विषंडाँकिनीविघ्न के भय अवाचं।।३।।
दरिद्रीन को द्रव्य के दानदीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने।
महासंकटों से निकारै विधाता, सबैसंपदा सर्व को देहि दाता।।४।।
महाचोर को बज्र को भय निवारै, महापौन के पूंजतै तू उबारै।
महाक्रोधकी अग्नि कोमेघ धारा, महालोम शैलेश को बज्रभार।।५।।
महामोह अंधेर को ज्ञानं भानं। महा-कर्म-कांतार को दौ प्रधान।

किये नागनागिन अधो लोक स्वामी हरयो मान तू दैत्य को हो अकामी।।६।।
तू ही कल्पवृक्षं तू ही कामधेनं। तू ही दिव्य चिंतामणी नाग एनं।
पशु नर्क के दुःखतै तू छुडावै। महास्वर्ग तै मुक्ति मैं तू बसावै।।७।।
करै लौह को हेमपाषाण नामी रटे नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।
करै सेव ताकी करैं देवसेवा सुनै वैन सोही लहै ज्ञान मेवा ।।८।।
जपै जाप ताकौ नहीं पाप लागै धरै ध्यान ताके सवै दोष भागै।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे तुम्हारी कृपा तैं सरैकाज मेरे।।९।।
दोहाःगणधर इंद्र न कर सकैं, तुम विनती भगवान।
मुझसे प्रीत निहार कैं, कीजे आप समान ।।१०।।

***

पद्मावती स्तोत्र

जिन शासनी हंसासनी पद्मासनी माता।
भुज चारते फल चार दे पद्मावती माता।। टेक
जब पार्श्वनाथ जी ने शुक्ल ध्यान अरंभा,
कमठेश ने उपसर्ग तब किया था अचंभा।
निज नाथ सहित आय के सहाय किया है,
जिननाथ को निज माथ पै चढ़ाय लिया है। जिन०१
फन तीन सुमन लीन तेरे शीश विराजें
जिनराज तहां ध्यान धरें आप विराजें
फणीन्द्र ने फनि की करी जिनंद पै छाया,
उपसर्ग वर्ग मेटि के आनंद बढ़ाया।। जिन० २
जिन पास को हुआ तभी केवल सुज्ञान है,
समवादी सरन की बनी रचना महान है।
प्रभु ने दिया धर्मार्थ काम मोक्ष दान है,
तब इन्द्र आदि ने किया पूजा विधान है।।जिन० ३
जब से किया तुम पास के उपसर्ग का विनाश,

तब से हुआ जस आपका त्रैलोक्य में प्रकाश।
इन्द्रादि ने भी आपके गुण में किया हुलास,
किस वास्ते कि इन्द्र खास पास का है, दास जिन ।।४
धर्मानुराग रंग से उमंग भरी हो,
संध्या समान लाल रंग अंग धरी हो।
जिन संत शीलवंत पै तुरन्त खड़ी हो।
मन भावती दरसावती आनंद बड़ी हो।। जिन० ५
जिन धर्म की प्रभावना का भाव किया है,
तिन साध ने भी आपकी सहाय लिया है।
तब आपने बस बात को बनाय दिया है,
जिन धर्म के निशान को फहराय दिया है।। जिन० ६
था बांध ने तारा का किया कुम्भ में थापन,
अकलंक जिसे करते रहे बाद बेहापन।
तब आप ने सहाय किया धाय मात धान,
तारा का हरा मान हुआ बौध उत्थान ।।जिन० ७
इत्यादि जहाँ धर्म का विवाद परा है,
तहाँ आपके परवादियों का मान हरा है,

तुमने यह स्याद्वाद का निशान खारा है।
इस वस्तु हम आप से अनुराग धरा है ।।जिन० ८
तुम शब्द ब्रह्मरूप मंत्र मूर्ति धरैया,
चिन्तामणि समान कामना की भरैया,
जप जाग जोग जन की सब सिद्धि करैया,
परवाद के पुर योग की तत्काल हरैया।। जिन० ६
लखि पास तेरे पास शगु त्रास तै भाजैं,
अंकुश निहार दुष्ट जुष्ट दर्प को त्याजै।
दुख रूप खार्व गर्व को यह वज्र हरैं है,
कर कंज में इक कंज सो सुख पुन्ज भरै है ।।जिन० १०
चरणारविंद में है नूपुरादि आभरन,
कटि में है सार मेखाला प्रमोद की करन।
उर में है सुमन माल भाल की माला,
पटरंग अंग संग सों सोहे विशाला। । जिन० ११
कर कंज चारू भूषाण सों भूरि भरा है,
भवि वृन्द को आनन्द कंद पूरि करा है।
जुग भान कान कुण्डल सों जोति धरा है,

शिर शीश फूल सों अतुल थरा है ।।जिन० १२
मुख चंद को अमन्द देख चंद भी थमा।
छवि हेर हार हो रहा, रम्भा को अचम्भा।
दृग तीन सहित तिलक भाल धरे हैं,
विकसित मुखारविद सों आनन्द भरे हैं ।।जिन० १३
जो आपको त्रिकाल लाल चाह सों ध्यावे,
विकराल भूमिपालु उसे भाल, झुकावे।
जो प्रीत सों प्रतीत सपरीति बढ़ावे,
सो रिद्धि सिद्धि वृद्धि नवों निधि को पावे ।।जिन० १४
जो दीप दान के विधान से तुम्हें जपैं,
सो पाप के निधान तेज पुन्ज से दीपै।
जो भेद मंत्र वेद में निवेद किया है,
सों बाध के उपाय सिद्ध साध लिया है।। जिन०१५
धन धान्य का अर्थी है सो धन धान्य को पावे,
सन्तान का अर्थी है सो सन्तान खिलावै।
निजराज का अर्थी है सो फिर राज लहावै,
पद भ्रष्ट सुपद पाय के मन मोद बढ़ावै।। जिन० १६

ग्रह क्रूर व्यन्तराल व्याल जाल पूतना,
तव नाम के सुन हाँक सों भागे हैं भूतना,
कफ वात पित्त रक्त रोग शोग शाकिनी,
तुम नाम तै डरी परात डांकिनी ।।जिन० १७
भयभीत की हरनी है तूही मात भवानी,
उपसर्ग दुर्ग द्रावती दुर्गावती रानी।
तुम संकटा समस्त कष्ट काटिनी दानी,
सुख सार की करनीत शंकरीश महारानी ।। जिन० १८
इस वक्त में जिन भक्त को दुःख व्यन्न सतावें,
ऐ मात तुझे देखि के क्या दर्द ना आवे।
सब दिन से तों करती रही जिन भक्त पर छाया,
किस वास्ते उस बात को ऐ मात भुलाया ।।जिन० १९
हो मात मेरे सर्व ही अपराध क्षमा कर,
होता नहीं क्या बाल से कुछाल यहाँ पर।
कुपुत्र तो होते हैं जगत माहिं सरासर,
माता न तजै तिनसों कभी नेह जन्म भर।।जिन० २०
अब मात मेरी बात को सब भाँत सुधारो,

मम कामना को सिद्ध करो विध्न विदारो।
मति देर करो मेरी ओर नेक निहारो,
करकंज की छाया करों दुःख दंद निवारो।। जिन० २१
ब्रह्मंडनी मुखमंडनी खलखंडनी ख्याता,
दुःख टारि के परिवार सहित दे मुझ साता।
तज को विलम्ब अब जो अविलम्बन दीजिये,
अब चन्द नन्द वृन्द को आनन्द दीजिये।। जिन० २२
जिन धर्म से डिगने का कहीं आ पड़े कारन,
तो लीजिये उभार मुझे भक्त उधारन।
निज कर्म के संयोग से जिस यौन में जावो,
तहाँ दीजिये सम्यक्त जो शिव धाम को पावो।।जिन० २३
जिन शासनी हंसासनी पद्मावती माता,
भुज चारतें फल चार दे पद्मावती माता ।।जिन०

***

भक्तामर स्तोत्र (भाषा)

आदिपुरूष आदीश जिन, आदि सुविधि करतार।
धरम-धुरंदर परमगुरु, नमों आदि अवतार।।
सुर-नत-मुकुट-रतन छवि करें, अंतरपाप-तिमिर-सब हरैं।
जिनपद वंदो मनवचकाय, भव-जल-पतित उधरन सहाय।।१।।
श्रुत-पारग इंद्रादिक देव, जाकी थुति कीनी कर सेव।
शब्द मनोहर अरथ विशाल, तिस प्रभु की वरनों गुन माल।।२।।
विबुध-वंध-पद मैं मति-हीन, हो-निर्लज्ज थुति-मनसा कीन।
जल-प्रतिबिम्ब बुद्ध कोगहै, शशि-मंडल बालक ही चहै।।३।।
गुन-समुद्र तुम गुन अविकार, कहत न सुर-गुरु पावै पार।
प्रलय-पवन-उद्धत जल-जन्तु, जलधि तिरै को भुज बलवन्तु।।४।।
सो मैं शक्तिहीन थुति करूँ, भक्ति-भाव-वश कछु नहिं डरूँ।
ज्योंमृगि नित-सुत पालन हेतु, मृगपति सन्मुखजाय अचेत ।।५।।
मैं शठ सुधीहँसन को धाम, मुझ तब भक्ति बुलावे राम।
ज्योंपिक अंब-कली परभाव, मधु-ऋतु मधुर करै आराव।।६।।
तुम जस जंपत जन छिनमहि, जनम-जनम के पाप नशाहिं।

ज्योंरवि उगे फटै तत्काल, अलिवत नील निशा-तमजाल।।७।।
तव प्रभावतैं कहूँ विचार, होसी यह थुति जन-मन-हार।
ज्यों जल-कमल पत्रपे परे, मुक्ताफल की द्युति विस्तरै।।८।।
तुम गुन-महिमा हत-दुख-दोष, सो तो दूर रहो सुख-पोष।
पाप विनाशक हैं तुम नाम, कमल-विकाशी जो रवि-धाम।।९।।
नहिं अचंभ जो होहिं तुरन्त,तुमसे तुम गुण वरणत सन्त।
जो अधीन को आप समान, करै न सो निंदित धनवान ।।१०।।
इकटक जन तुमको अविलोय, अवर-विषै रति करै न सोय।
को करि क्षीर-जलधि जलपान, क्षार नीर पीवै मतिमान।।११।।
प्रभु तुम वीतराग गुण-लीन, जिन परमाणु देह तुम कीन।
हैं तितने ही ते परमाणु, यातैं तुम सम रूप न आनु ।।१२।।
कहँ तुम मुख अनुपम अविकार, सुर-नर-नाग-नयन-मनहार।
कहाँ चन्द्र-मंडल-सकलंक, दिनमें ढाक-पत्र समरंग।।१३।।
पूरन चन्द्र-ज्योति छविवंत, तुम गुन तीन जगत लंघंत।
एक नाथ त्रिभुवन आधार, तिन विचरत को करै निवार।।१४।।
जो सुर-तिय विभ्रम आरम्भ, मन न डिग्यो तुम तौ न अचंभ।
अचल चलावै प्रलय समीर, मेरू-शिखर डगमगे न धीर।।१५।।

धूमरहित बाती गत नेह, परकाशै त्रिभुवन-घर एह।
वात-गम्य नाहीं प्रचण्ड, अपर दीप तुम बलो अखण्ड।।१६।।
छिपहु न लुपहु राहुकी छांही, जग परकाशक हो छिनमांहि।
धन अनवर्त दाह विनिवार, रवितै अधिक धरों गुणसार।।१७।।
सदा उदित विदलित तममोह, विघटित मेघ राहु अविरोह।
तुम मुख कमल अपूरब चन्द, जगत-विकाशी ज्योति अमंद।।१८।।
निश-दिन शशि रवि को नाहि काम, तुम मुख-चन्द हरै तम-धाम।
जो स्वभावतें उपजै नाज, सजल मेघ तैं कौनहु काज।।१६।।
जो सुबोध सोहै तुम माही, हरि हर आदिक में सो नाहि
जो द्युति महा-रतन में होय, काच-खण्ड पावै नहिं सोय ।।२०।।

नारचछन्द

सराग देव देख मैं भला विशेष मानिया।
स्वरूप जाहि देख वीतराग तू पिछानिया।।
कछू न तोहि देखके जहाँ तुही विशेखिया।
मनोग चित्त-चोर और भूल हूँ न पेखिया।।२१।।
अनेक पुत्रवंतिनि नितंबिनी सपूत हैं।

न तो समान पुत्र और माततैं प्रसूत हैं।
दिशा धरंत तारिका अनेक कोटि को गिनै।
दिनेश तेजवंत एक पूर्व हि दिशा जनै।।२२।।
पुरान हो पुमान हो पुनीत पुण्यवान हो।
कहैं मुनीश अंधकार-नाश को सुभान हो।।
महंत तोहि जानके न होय वश्य कालके।
न और मोहि मोखपंथ देय तोहि टालके ।।२३।।
अनन्त नित्य चित्त की अगम्य रम्य आदि हो।
असंख्य सर्वव्यापि विष्णु ब्रह्मा हो अनादि हो।
महेश कामकेतु योग ईश योग ज्ञान हो।
अनेक एक ज्ञानरूप शुद्ध संतमान हो।।२४।।
तुही जिनेश बुद्ध है सुबुद्धि के प्रमानतैं।
तुही जिनेश शंकरो जगत्त्रये विधानतैं।।
तुही विधात है सही सुमोखपंथ धारतैं।।
नरोत्तमो तुही प्रसिद्ध अर्थ के विचारतैं।।२५।।
नमो करूँ जिनेश तोहि आपदा निवार हो।
नमो करूँ सुभूरि-भूमि-लोकके सिंगार हो।

नमो करूँ भवाब्धि-नीर-राशि-शोष हो ।
नमो करूँ महेश तोहि मोखपंथ देतु हो।।२६।।

चौपाई

तुम जिन पूरन गुन-गन भरे, दोष गर्वकरि तुम परिहरे।
और देव-गण आश्रय पाय, स्वप्न न देखे तुम फिर आय ।।२७।।
तरू अशोक-तर किरन उदार, तुम तन शोभित है अविकार।
मेघ निकट ज्यों तेज फुरंत, दिनकर दिपै तिमिर निंहनंत।।२८।।
सिंहासन मणि-किरन-विचित्र, तापर कंचन-वरन पवित्र।
तुम तन शोभित किरन विथार, ज्यों उदयाचल रवि तुम हार।।२९।
कुंद-पुहुप-सित-चमर ढुरंत, कनक-वरन तुम तन शोभंत।
ज्यों सुमेरू-तट निर्मल कांति, झरना झरै नीर उमगांति।।३०।।
ऊँचे रहे सूर दुति लोप, तीन छत्र तुम दिपै अगोप।
तीन लोक की प्रभुता कहें, मोती-झालरसों छवि लहें।।३१।।
दुंदुभिशब्द गहर गंभीर, चहुँ दिशि होय तुम्हारे धीर।
त्रिभुवन-जन शिव-संगम करै, मानूँ जय जय रव उच्चरै।।३२।।
मंद पवन गंधोदक इष्ट, विविध कल्पतरू पुहुप-सुवृष्ट।

देव करैं विकसित दल सार, मानों द्विज पंकति अवतार।।३३।।
तुम तन-भामंडल जिनचन्द, सब दुतिवंत करत है मन्द।
कोटिशंख रवि तेज छिपाय, शशि निर्मल निशि करे अछाय ।।३४।।
स्वर्ग-मोख-मारग-संकेत, परम-धरम उपदेशन हेत।
दिव्य वचन तुम खिरें अगाध, सब भाषा-गर्भित हित साध।।३५।।

दोहा

विकसित-सुवरन-कमल-दुति, नख-दुति मिलि चमकाहिं।
तुम पद पदवी जहं धरो, तहँ सुर कमल रचाहिं।।३६।।
ऐसी महिमा तुम विषै, और धरै नहिं कोय।
सूरज में जो जोत है, नहिं तारा-गण होय।।३७।।

षट्पद

मद-अविलिप्त कपोल-मूल अलि-कुल झंकारें।
तिन सुन शब्द प्रचंड क्रोध उद्धत अति धारैं।
काल-वरन विकराल, कालवत सन्मुख आवै।
ऐरावत सो प्रबल सकल जन भय उपजावैं।
देखि गयंद न भय करै तुम पद-महिमा लीन।

विपति रहित संपति-सहित वरतैं भक्त अदीन।।३८।।
अति मद-मत्त-गयदं कुंभ-थल नखन विदारै।
मोती रक्त समेत डारि भूतल सिंगारै।
बांकी दाढ़ विशाल वदन में रसना लोलै।।
भीम भयानक रूप देख जन थरथर डोलैं।
ऐसे मृग-पति पग तलैं जो नर आयो होय।
शरण गये तुम चरण की बाध करै न सोय।।३९।।
प्रलय-पवनकर उठी आग जो तास पटंतर।
वमै फुलिंग शिखा उतंग पर जलें निरंतर।।
जगत समस्त निगल्ल भस्म कर दे मानो।
तडतडाट दव-अनल जोर चहूँ-दिशा उठानों।।
सो इक छिन में उपशमैं नाम-नीर तुम लेत।
होय सरोवर परिन में विकसित कमल समेत।।४०।।
कोकिल-कंठ-समान श्याम-तन क्रोध जलन्ता।
रक्त-नयन फुंकार मार विष-कण उगलंता।।
फण को ऊँचा करे वेग ही सन्मुख धाया।
तब जन होय निशंक देख फणपतिको आया।।

जो चांपै निज पगतले व्यापे विष न लगार।
नाग दमनिं तुम नामकी है जिनके आधार ।।४१।।
जिस रन-माहिं भयानक रव कर रहे तुरंगम।
घनसम गज गरजाहिं मत्त मानों गिरि जंगम।।
अति कोलाहल माहिं बात जहँ नहिं सुनीजै।
राजनको परचंड, देख बल धीरज छीजै।।
नाथ तिहारे नामतैं अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतै अन्धकार विनशाय।।४२।।
मारे जहाँ गयंद कुंभ हथियार विदारे।
उमगै रूधिर प्रवाह वेग जलसम विस्तारे।।
होय तिरन असमर्थ महाजोधा बलपूरे।
तिस रनमें जिन तोर भक्त जे हैं नर सूरे।।
दुर्जयआरिकुल जीत के जयपावैं निकलकं।
तुम पद पंकज मन बसैं ते नीर सदा निशंक।।४३।।
नक्र चक्र मगरादि मच्छकरि भय उपजावै।
जामैं बड़वा अग्नि दाहतें नीर जलावै।।
पार न पावैं जास थाह नहि लहिये जाकी।।

गरजै अतिगँभीर लहरकी गिनति न ताकी।।
सुखसों तिरैं समुद्रको, जे तुम गुन सुमराहिं।
लोल कलोलनके शिखर, पार यान ले जाहिं।।४४।।
महा जलोदर रोग, भार पीड़ित नर जे हैं।
वात पित्त कफ कुष्ट, आदि जो रोग गहे हैं।।
सोचत रहें उदास, नाहिं जीवन की आशा।
अति घिनावनी देह धरै दुर्गन्ध निवासा।।
तुम पद-पंकज-धूल को, जो लावैं निज अंग।।
ते नीरोग शरीर लहि, छिनमें होय अनंग।।४५।।
पांव कंठते जकर बांध, सांकल अति भारी।
गाढ़ी बेड़ी पैर मांहि, जिन जांध बिदारी।
भूख प्यास चिंता शरीर दुख जे विललाने।
सरन नाहिं जिन कोय भूप के बंदीखाने।।
तुम सुमरत स्वयमेव ही बंधन सब खुल जाहिं।
छिनमें ते संपति लहैं, चिन्ता भय विनसाहिं।।४६।।
महामत्त गजराज और मृगराज दवानल।
फणपति रण परचंड नीरनिधि रोंग महाबल।।

बंधन ये भय आठ डरपकर मानों नाशै।
तुम सुमरत छिनमाहिं अभयस थानक परकाशै।।
इस अपार संसार में शरन नाहिं प्रभु कोय।
यातै तुम पदभक्तको भक्ति सहाई होय।।४७।।
यह गुनमाल विशाल नाथ तुम गुनन संवारी।
विविधर्णमय पुहुप गूँथ में भक्ति विथारी।
जे नर पहिरें कंठ भावना मनमें भावें।
मानतुंग सम निजाधीन शिवलक्ष्मी पावें ।।
भाषा भक्तामर कियो, 'हेमराज' हित हेत।
जे नर पढ़ै सुभावसौं, तै पावै शिवखेत ।।४८।।

भक्तामर-महिमा

श्री भक्तामर का पाठ, करो नित प्रात, भक्ति मन लाई।
सब संकट जायें नशाई ।।
जो ज्ञान-मान-मतवारे थे, मुनि मानतुंग से हारे थे।।
उन चतुराई से नृपति लिया, बहकाई।। सब संकट ।।२।।
मुनि जी को नृपति बुलाया था, सैनिक जा हुक्म सुनाया था।

मुनि वीतराग को आज्ञा नहीं सुहाई।। सब संकट०।।२
उपसर्ग घोर तब आया था, बलपूर्वक पकड़ मंगवाया था।
हथकड़ी बेड़ियों से तन दिया बंधाई ।।सब संकट०।।३
मुनि काराग्रह भिजवाये थे, अड़तालिस ताले लगाये थे।
क्रोधित नृप बाहर पहरा दिया बिठाई।। सब संकट०।।४
मुनि शान्तभाव अपनाया था, श्री आदिनाथ को ध्याया था।
हो ध्यान-मग्न भक्तामर दिया बनाई ।। सब संकट०।।५
सब बन्धन टूट गये मुनि के, ताले सब स्वयं खुले उनके।
कारागह सें आ बाहर दिये दिखाई।। सब संकट०।।६
राजा नत होकर आया था, अपराध क्षमा करवाया था।
मुनि के चरणों में अनुपम भक्ति दिखाई ।।सब संकट०।।७
जो पाठ भक्ति से करता है, नित ऋभष-चरण चित धरता है।
जो ऋद्धि-मंत्र का विधिवत जाप कराई ।।सब संकट०।।८
भय विघ्न उपद्रव टलते हैं विपदा के दिवस बदलते हैं।
सब मन वांछित हों पूर्ण, शान्ति छा जाई।।सब संकट०।।९
जो वीतराग आराधन है, आतम उन्नति का साधन है।
उससे प्राणी का भव बन्धन कट जाई।। सब संकट.।।१०

"कौशल" सुभक्ति को पहिचानों, संसार-दृष्टि बन्धन जानो।
लो भक्तामर से आत्म-ज्योति प्रकटाई।।सब संकट०।।११

***

श्री आदिनाथ चालीसा

शीश नवा अरिहंत को,सिद्धन को, करूं प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का ले सुखकारी नाम।।
सर्व साधु और सरस्वती जिन मन्दिर सुखकार।
आदिनाथ भगवान को मन मन्दिर में धार ।।

चौपाई

जै जै आदिनाथ जिनस्वामी, तीनकाल तिहूं जगमें नामी।
वेष दिगम्बर धार रहे हो, कर्मों को तुम मार रहे हो।।
हो सर्वज्ञ बात सब जानो, सारी दुनियां को पहचानो।
नगर अयोध्या जो कहलाये, राजा नाभिराज बतलाये।।
मरुदेवी माता के उदर से, चैतवदी नवमी को जन्मे।
तुमने जग को ज्ञान सिखाया, कर्मभूमि का बीज उपाया।
कल्पवृक्षजब लगे बिछरने, जनता आई दुखड़ा कहने।

सब का संशय तभी भगाया, सूर्य चन्द्र का ज्ञान कराया।।
खेती करना भी सिखलाया, न्याय दण्ड आदिक समझाया।
तुमने किया नीति का, सबक आपसे जग ने सीखा।।
पुत्र आपका भरत बताया, चक्रवर्ती जग में कहलाया।
बाहुबलि जो पुत्र तुम्हारे,भरत से पहले मोक्ष सिधारे।।
सुता आपकी दो बतलाई, ब्राह्मी और सुन्दरी कहलाई।।
उनको भी विद्या सिखलाई, अक्षर और गिनती बतलाई।।
एकदिन राजसभा के अन्दर, एक अप्सरा नाच रही थी।
आयु उसकी बहुत अल्प थी, इसीलिए आगे नहीं नाच सकी थी।
विलय हो गया उसका सत्वर, झट आया वैराग्य उमड़कर।
बेटों को झट पास बुलाया, राजपाट सब में बंटवाया ।।
छोड़ सभी झंझट संसारी, वन जाने की करी तैयारी ।
राव(राजा) हजारों साथ सिधाए, राजपाट तज वन को धाये ।।
लेकिन जब तुमने तप कीना, सबने अपना रस्ता लीना।
वेष दिगम्बर तजकर सबने, छाल आदि के कपड़े पहने।
भूख प्यास से जब घबराये,फल आदि खाकर भूख मिटाये।
तीन सौ त्रेसठ धर्म फैलाये,जो अब दुनियां में दिखलाये

छैः महीने तक ध्यान लगाये, फिर भोजन करने को धाये(गए)।
भोजन विधि जाने नाहि कोय,कैसे प्रभुका भोजन होय।।
इसी तरह बस चलते चलते,छः महीने भोजन बिन बीते।
नगर हस्तिनापुर में आये,राजा सोम श्रेयांस बताए।।
याद तभी पिछला भव आया, तुमको फौरन ही पड़घाया।
रस गन्ने का तुमने पाया, दुनिया को उपदेश सुनाया।।
तप कर केवल ज्ञान पाया, मोक्ष गए सबजग हर्षाया।
अतिशय युक्त तुम्हारा मन्दिर, चांदखेड़ी भंवरे के अन्दर।।
उसका यह अतिशय बतलाया, कष्ट क्लेश का होय सफाया।
मानतुंग पर दया दिखाई, जंजीरें सब काट गिराई।।
राजसभा में मान बढ़ाया,जैन धर्म जग में फैलाया।।
मुझ पर भी महिमा दिखलाओ, कष्ट भक्त का दूर भगाओ।।
सोरठा - पाठ करे चालीस दिन नित चालीस ही बार।
चांदखेड़ी में आय के, खेवे धूप अपार ।।
जन्म दरिद्री होय जो होय कुबेर समान।
नाम वंशजग में चले जिनके नहीं सन्तान।।

***

श्री चन्द्र प्रभु चालीसा

वीतराग सर्वज्ञ जिन, जिन वाणी को ध्याय।
लिखने का साहस करूँ, चलीसा सिर नाय।।१।।
देंहरे के श्री चन्द्र को, पूजों मन वच काय।
ऋध्दि सिध्दि मंगल करैं, विघ्न दूर हो जाय।।२।।
जय श्री चन्द्र दया के सागर, देहरे वाले ज्ञान उजागर।।३।।
शान्ति छवि मूरति अति प्यारी, भेष दिगम्बर धारा भारी।।४।।
नासा पर है दृष्टि तुम्हारी, मोहनी मूरति कितनी प्यारी।।५।।
देवों के तुम देव कहावों, कष्ट भक्त के दूर हटावो।।६।।
समन्तभद्र मुनिवर ने ध्याया, पिंडी फटी दर्श तुम पाया।।७।।
तुम जग में सर्वज्ञ कहावों, अष्टम तीर्थंकर कहलावो।।८।।
महासेन के राजदुलारे, मात सुलक्षणा के हो प्यारे।।६।।
चन्द्रपुरीनगरी अति नामी, जन्म लिया चन्द्र-प्रभु स्वामी।।१०।।
पौष वदी ग्यारस हो जन्मे, नर-नारी हरषे तब मन में।।११।।
काम क्रोध तृष्णा दुखकारी, त्याग सुखद मुनि दीक्षा धारी।।१२।।
फाल्गुन वदी सप्तमी भाई, केवल ज्ञान हुआ सुखदाई।।१३।।
फिर सम्मेद शिखर पर जाके, मोक्ष गये प्रभु आप वहाँ से।।१४।।

लोभ मोह और छोड़ी माया, तुमने मान कषाय नसाया।।१५।।
रागी नहीं, नहीं तू द्वेषी, वीरराग तू हित उपदेशी।।१६।।
पंचम काल महा दुखदाई, धर्म कर्म भूले सब भाई।।१७।।
अलवर प्रान्त में नगर तिजारा,होय जहाँ पर दर्शन प्यारा।।१८।।
उत्तर दिशि में देहरा माहीं, वहाँ आकर प्रभुता प्रगटाई।।१९।।
सावन सुदि दशमी शुभ नामी, आन पधारे त्रिभुवन स्वामी।।२०।।
चिन्ह चन्द्र का लख नर-नारी, चन्द्रप्रभु की मूरत मानी।।२१।।
मूर्ति आपकी अति उजियाली, लगता हीरा भी है जाली।।२२।।
अतिशय चन्द्र प्रभु का भारी, सुनकर आते यात्री भारी।।२३।।
फाल्गुन सुदी सप्तमी प्यारी, जुड़ता है मेला यहाँ भारी।।२४।।
कहलाने को तो शशि धर हो, तेज पुंज रवि से बढ़कर हो।।२५।।
नाम तुम्हारा जग में सांचा, ध्यावत भागत भूत पिचाशा ।।२६।।
राक्षस भूत प्रेत सब भागें, तुम सुमरत भय कभीना लागे।।२७।।
कीर्ति तुम्हारी है अति भारी, गुण गाते नित नर और नारी।।२८।।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, संकट झट कटता है भारी।।२९।।
जो भी जैसी आस लगाता, पूरी उसे तुरन्त कर पाता।।३०।।
दुखिया दर पर जो आते हैं, संकट सब खो कर जाते हैं।।३१।।

खुला सभी को प्रभु द्वार है, चमत्कार को नमस्कार है।।३२।।
अन्धा भी यदि ध्यान लगावे, उसके नेत्र शीघ्र खुल जावें।।३३।।
बहरा भी सुनने लग जावे, पगले का पागलपन जावे।।३४।।
अखंड ज्योतिका घृत जो लगावे, संकट उसका सब कट जावे।।३५।।
चरणों की रज अति सुखकारी, दुखदरिद्र सब कट जावे।।३६।।
चालीसा जो मन से ध्यावे, पुत्र पौत्र सब सम्पति पावे।।३७।।
पार करो दुखियों की नैया, स्वामी तुम बिन नहीं खिवैया।।३८।।
प्रभु मैं तुम से कुछ नहीं चाहूं, दर्श तिहारा निश दिन पाऊँ।।३६।।
करूँ वन्दना आपकी, श्री चन्द्र प्रभु जिनराज।
जंगल में मंगल कियो, रखो हमारी लाज।।४०।।

***

पार्श्वनाथ चालीसा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूं प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम।।
सर्वसाधु और सरस्वती, जिन मंदिर सुखकार।
अहिच्छत्र और पार्श्वको, मन मंदिर में धार।।

तुम हो पार्श्व जगत हितकारी, हो स्वामी तुम व्रत के धारी।।
सुर नर असुर करें तुम सेवा, तुम हीं सब देवन के देवा।।
तुमसे करम शत्रु भी हारा, तुम कीना जग का निस्तारा।
अश्वसैन के राजदुलारे, वामा की आँखों के तारे।
काशीजी के राव कहाए, सारी प्रजा मौज उडाए।
इक दिन सब मित्रों को लेके, सैर करन को बन में पहुँचे।
हाथी पर कसकर अम्बारी, इक जंगल में गई सवारी।।
एक तपस्वी देखा वहाँ पर, उससे बोले वचन सुनाकर।।
तपसी! तू क्यों पाप कमाते, इस लक्कड़ में जीव जलाते।
तपसी ने तभी कुदाल उठाया, उस लक्कड़ को चीर गिराया।।
निकले नाग नागनी कारे, मरने के थे निकट बेचारे।
रहम प्रभु के दिल में आया, तभी मन्त्र नवकार सुनाया।।
मरकर वो पाताल सिधाये, पद्मावति धरणेन्द्र कहाये।
तपसी मर की देव कहाया, नाम कमठ ग्रन्थों में गाया।।
एक समय श्री पारस स्वामी, राज छोड़कर वन की ठानी।।
तप करते थे ध्यान लगाऐ, इक दिन कमठ वहाँ पर आये।।
फौरन ही प्रभु को पहिचाना, बदला लेने को दिल ठाना।।
बहुत अधिक बारिस बरसाई, बादल गरज बिजली गिराई।।

बहुत अधिक पत्थर बरसाए, स्वामी तन को नहीं हिलाइ।।
पद्मावती धरणेन्द्र भी आये, प्रभु की सेवा में चित लाये
पद्मावति ने फन फैलाया, उस पर स्वामी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने फन फैलाया, प्रभु के सर पर छत्र बनाया।
कर्म नाश प्रभु ज्ञान उपाया, समोवशरण देव इन्द्र रचाया।
यही जगह अहिक्षेत्र कहाए, पात्र केशरी जहाँ पर आए।
वह पण्डित ब्राह्मण विद्वाना, जिनको जाने सकल जहाना।।
शिष्य ५०० संग में आए, सब कट्टर ब्राह्मण कहलाए।
पार्श्वनाथ का दर्शन पाया, सब ने जैन धर्म अपनाया।।
अहिक्षेत्र थी सुन्दर नगरी, जहाँ सुखी थी परजा सगरी।
राजा श्री वसुपाल कहाये, वो इक जिन मन्दिर बनवाये।।
प्रतिमा पर पालिश करवाया, फौरन इक मिस्त्री बुलवाया।।
वह मिस्त्री मांस खाता था,इससे पालिश गिर जाता था।
मुनि ने उसे उपाय बताया, पारस दर्शन व्रत दिलवाया।
मिस्त्री ने व्रत पालन कीना, फौरन ही रंग चढ़ा नवीना।।
गदर सतावत का किस्सा है, इक माली को यों ही लिक्खा है।
माली इक प्रतिमा को लेकर, झट छुप गया कुएं के अन्दर ।।
उस पानी का अतिशय भारी, दूर होय सारी बीमारी।

जाक अहिक्षेत्र हृदय से ध्यावे, सो नर उत्तम पदवी पावे।।
पुत्र सम्पदा की बढ़ती हो, पापों की एकदम घटती हो।
है तहसील आंवला भारी, स्टेशन पर मिले सवारी।।
रामनगर इक ग्राम बराबर, जिनको जाने सब नर नारी।।
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे, हाथ जोड़कर शीश नवावे।।

सोरठा

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, अहिक्षेत्र में आयके।।
होय कुबेर समान, जन्म-दरिद्री होय जो।
जिसके नहीं सन्तान, नाम वंश जग में चले।।
जाप (ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय नमः)

***

श्री महावीर चालीसा

शीश नवा अरहंत का, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम ।।
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।।

महावीर भगवान को, मन मन्दिर में धार ।।
जय महावीर दयालु स्वामी। वीर प्रभु तुम जग में नामी।।
वर्धमान है नाम तुम्हारा। लगे हृदय को प्यारा प्यारा।।
शांति छवि और मोहनी मूरत। शान हँसीली सोहनी सूरत।।
तुमने भेष दिगम्बर धारा। कर्म शत्रु भी तुमसे हारा।।
क्रोध मान और लोभ भगाया। माया ने तुमसे भय खाया।।
तू सर्वज्ञ सर्व का ज्ञाता। तुमको दुनियां से क्या नाता।।
तुझ में नहीं राग और द्वेष। वीतराग तू हितोपदेश।।
तेरा नाम जगत में सच्चा। जिसको जाने बच्चा बच्चा।।
भूत-प्रेत तुमसे भय खावें। व्यंतर राक्षस सब भग जावें।।
महाव्याधि मारी न सतावे। महाविकराल काल डर खावे।।
काला नाग होय फणधारी। या हो शेर भयंकर भारी।।
ना ही कोई बचाने वाला। स्वामी तुम्हीं करो प्रतिपाला।।
अग्नि दावानल सिलग रही हो। तेज हवा से भड़क रही हो।।
नाम तुम्हारा सब दुख खोवे। आग एक दम ठण्डी होवे।
हिंसा मय था भारत सारा। तब तुमने कीनी निस्तारा।।
जन्म लिया कुण्डलपुर नगरी। हुई सुखी तब प्रजा सगरी।।
सिद्धारथ जी पिता तुम्हारे। त्रिशला की आँखों के तारे।।
छोड़ के सब झंझट संसारी। स्वामी हुए बाल ब्रह्मचारी।।
पंचम काल महा दुखःदायी। चांदनपुर महिमा दिखलायी।।
टीले में अतिशय दिखलाया। एक गाय का दूध गिराया।।

सोच हुआ मन में ग्वाले के। पहुंचा एक फावड़ा लेके।।
सारा टीला खोद भगाया। तब तुमने दर्शन दिखलाया।।
जोधराज को दुखः ने घेरा। उसने नाम जपा तब तेरा।।
ठण्डा हुआ तोप का गोला। तब सबने जयकारा बोला।।
मन्त्री ने मन्दिर बनवाया। राजा ने भी द्रव्य लगाया।।
बड़ी धर्मशाला बनवाई। तुझको लाने की ठहराई।।
तुमने तोड़ी बीसों गाड़ी। पहिया खिसका नहीं अगाड़ी।।
ग्वाले ने जो हाथ लगाया। फिर तो रथ चलता ही पाया।।
पहले दिन बैशाख बदी के, रथ जाता है तीर नदी के।।
मीना गूजर सब आते हैं। नाच कूद चित उमगाते हैं।।
स्वामी तुमने प्रेम निभाया। ग्वाले का तुम मान बढ़ाया।।
हाथ लगे ग्वाले का जब ही। रथ चलता है स्वामी तब ही।
मेरी है टुटी सी नैया। तुम बिन कोई नहीं खिवैया।।
मुझ पर स्वामी जरा कृपा कर। मै हूँ प्रभु तुम्हारा चाकर।।
तुमसे मैं अरू कुछ नहीं चाहूँ। जन्म जन्म तब दर्शन पाऊँ।।
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे। वीर प्रभु को शीश नवावे।।

सोरठा

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, वर्धमान के सामने।
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहीं सन्तान, नाम वंश जग में चले।

पंच परमेष्ठी की आरती

इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परमपद भज सुख लीजै टेक।
पहली आरती श्री जिनराजा, भव-दधि पार उतार जिहाजा।इह०
दूसरी आरती सिद्धन केरि, सुमिरन करत मिटै भव फेरी।इह०
तीजी आरती सूर मुनिन्दा, जन्म मरण दुख दूर करिन्दा।इह०
चौथी आरती श्री उवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया।इह०
पाँचवीं आरती साधुतिहारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी।इह०
छट्ठी ग्यारह प्रतिमा धारी, श्रावक बंदों आनन्दकारी।इह०
सातवीं आरती श्री जिनवाणी, सेवक स्वर्ग मुक्ति सुखदानी।इह०
जो यह आरती पढ़े पढ़ावे सो नर मोक्ष मुक्ति पद पावे।
संध्या करके आरती कीजे। अपना जन्म सफल कर लीजै।।

* * *

आरती श्री महावीर स्वामी की

जय महावीर प्रभो स्वामी जय महावीर प्रभो।
कुंण्डल पुर अवतारी, त्रिशला नन्द विभो।।ओ०
सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी
बाल ब्रह्मचारी व्रत, पाल्यो तपधारी। ओ०
आत्म ज्ञान वैरागी, सम दृष्टि धारी।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी।। ओ०
जग में पाठ अहिंसा विस्तारयो।
हिंसा पाप मिटाकर सुधर्म परिचारयो।। ओ०
यहि विधि चाँदनपुर में, अतिशय दरशायो।
ग्वाल मनोरथ पूरयो, दूध गाय पायो।।ओ०
अमरचन्द को स्वपना, तुमने प्रभु दीना।
मन्दिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना।। ओ०
जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी।
एक ग्राम तिन दीनो, सेवा हित यह भी। ओ०
जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर आवै।

धन सुत सबकुछ पावै, संकट मिट जावै।। ओ०
निस दिन प्रभु मन्दिर में जगमग ज्योति जरैं।
हरि प्रसाद चरणों में, आनन्द मोद भरे।। ओ०

श्री भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण।
पारस प्यारा, मेटो-मेटो जी संकट हमारा।।टेक।।
निश दिन तुमको जपूँ, पर से नेहा तजूँ।
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा।। मेटो।।
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा देवी के सुत प्राण प्यारे।
सबसे नेहा तोड़ा, जग से मुँह को मोडा, संयम धारा।। मेटो।।
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये।
आशा पूरों सदा, दुख नहीं पावे कदा, सेवक थारा।। मेटो।।
जग के दुख तो परवाह नहीं है, स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है।
मेटो जामन-मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा।। मेटो।।
लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊं, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊं।
पंकज व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया, लागे खारा। मेटो।।

भजन संग्रह

मंत्र जपो नवकार

मंत्र जपो नवकार मनवा, मंत्र जपो नवकार। पांच पदों के पैंतीस अक्षर, हैं सुख के आधार, मनवा हैं सुख के आधार ।। मन्त्र, अरिहन्तों का सुमरन कर ले, सिद्ध प्रभु का नाम तू जप ले, आचार्य सुखकार मनवा, मंत्र जपो नवकार। मंत्र उपाध्याय को मन में ध्याले, सर्व साधु को शीश नवाले, होवे भव से पार मनवा, मंत्र जपो नवकार। मंत्र, धनहीन सुख सम्पति पावे, मन वांछित हर काम बनावे, सुखी रहे परिवार मनवा, मंत्र जपो नवकार। मंत्र रोग शोक को दूर भगावे, जन्म जरा मृत दोष मिटावे, भव दुख भंजन हार, मनवा मन्त्र जपो नवकार।। मन्त्र णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते सब जगजान लिया।
सब जीवों को मोक्षमार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया।।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो।।१।।
विषयों की आशा नहिं जिनके साम्य-भाव धन रखते हैं।
निज-परके हित-साधन में जो निश-दिन तत्पर रहते हैं।।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुख-समूह को हरते हैं।।२।।
रहे सदा सत्संग उन्हीं का ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे।।
नहीं सताऊँ किसी जीव को झूठ कभी नहिं कहा करूँ।
परधन-वनिता पर नर न लुभाऊँ, सतोषामृत पिया करूँ।।३।।
अहंकार का भाव ना रक्खूं नहीं किसी पर क्रोध करूँ।।
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य व्यवहार करूँ।

बने जहाँ तक इस जीवन में औरों का उपकार करूँ।।४।।
मैत्रीभाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा-स्त्रोत बहे।।
दुर्जन-क्रूर-कुमार्ग-रतों पर क्षोम नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावें।।५।।
गुणी जनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवें।।
बने जहाँ तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नहीं कृतघ्य कभी मैं द्राह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित दृष्टि न दोषों पर जावे।।६।।
कोई बुरा कहो या अच्छा लक्ष्मी आवे या जावे।।
अनेक वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे।
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा कभी न पद डिगने पावे।।७।।
हो कर सुख में मग्न न फूले दुख में कभी न घबरावे।
पर्वत-नदी शमशान भयानक अटवी से नहीं भय खावे।
रहे अडोल-अंकप निरंतर यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट-वियोग -अनिष्ट-योग में सहन-शीलता दिखलावे।।८।।

सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे ।।
बैर-पाप अभिमान छोड़ जग नित्य नये मंगल गावें ।
ज्ञान-चरित उन्नकर अपना मनुज-जन्म फल सब पावें ।।६।।
इति भीति व्यापे नहिं जग में वृष्टि समय पर हुआ करे ।
धर्मनिष्ट होकर राजा भी न्याय प्रजा का किया करें ।।
रोग मेरी दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शान्ति से जिया करें ।
परम अहिंसा-धर्म जगत में फैले सर्व हित किया करे ।
फैले प्रेम परस्पर जगत में मोह दूर ही रहा करे ।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहिं कोई मुख से कहा करे ।
बनकर सब 'युगवीर' हृदय से देशोन्नति-रत रहा करें ।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से सब दुःख संकट सहा करें ।।११।।

***